قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ

पारा - 15

eParah

17 سُوْرَةُ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ مَكِّيَّةٌ 50

اٰیَاتُهَا: 111 | رُكُوْعَاتُهَا: 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

سُبْحٰنَ	الَّذِیْٓ	اَسْرٰی	بِعَبْدِهٖ	لَیْلًا	مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ	اِلَی
पाक है	वो जो	ले गया	अपने बंदे को	रात के एक हिस्से में	मस्जिदे हराम से	तरफ़

الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا	الَّذِیْ	بٰرَكْنَا	حَوْلَهٗ	لِنُرِیَهٗ	مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ
मस्जिदे अक़सा के	वो जो	बरकत दी हमने	उसके इर्द-गिर्द को	ताकि हम दिखाऐं उसे	अपनी निशानियों में से

اِنَّهٗ	هُوَ	السَّمِیْعُ	الْبَصِیْرُ ①	وَاٰتَیْنَا	مُوْسَی	الْكِتٰبَ	وَجَعَلْنٰهُ
बेशक वो	वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब देखने वाला	और दी हमने	मूसा को	किताब	और बनाया हमने उसे

هُدًی	لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ	اَلَّا	تَتَّخِذُوْا	مِنْ دُوْنِیْ	وَكِیْلًا ② ؕ
हिदायत का ज़रिया	बनी इस्राईल के लिए	कि ना	तुम बनाओ	मेरे सिवा	कोई कारसाज़

ذُرِّیَّةَ	مَنْ	حَمَلْنَا	مَعَ نُوْحٍ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	عَبْدًا	شَكُوْرًا ③
(ऐ) औलाद	उनकी जिन्हें	सवार किया हमने	साथ नूह के	बेशक वो	था वो	बंदा	शुक्र गुज़ार

وَقَضَیْنَآ	اِلٰی بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ	فِی الْكِتٰبِ	لَتُفْسِدُنَّ	فِی الْاَرْضِ
और फ़ैसला सुना दिया हमने	बनी इस्राईल को	किताब में	अलबत्ता तुम ज़रूर फ़साद करोगे	ज़मीन में

مَّرَّتَیْنِ	وَلَتَعْلُنَّ	عُلُوًّا	كَبِیْرًا ④	فَاِذَا	جَآءَ	وَعْدُ
दो बार	अलबत्ता तुम ज़रूर सरकशी करोगे	सरकशी	बहुत बड़ी	फिर जब	आ गया	वादा

اُوْلٰىهُمَا	بَعَثْنَا	عَلَیْكُمْ	عِبَادًا لَّنَآ	اُولِیْ بَاْسٍ	شَدِیْدٍ
उन दोनों में से पहला	भेजा हमने	तुम पर	अपने बंदों को	लड़ाई वाले	शदीद

فَجَاسُوْا	خِلٰلَ	الدِّیَارِ ؕ	وَكَانَ	وَعْدًا	مَّفْعُوْلًا ⑤	ثُمَّ
तो वो घुस गए	अंदर	शहरों/घरों के	और था वो	एक वादा	होकर रहने वाला	फिर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَدَدْنَا	لَكُمُ	الْكَرَّةَ	عَلَيْهِمْ	وَأَمْدَدْنَاكُمْ	بِأَمْوَالٍ	وَبَنِينَ
लौटा दी हमने	तुम्हारे लिए	बारी	उन पर	और मदद दी हमने तुम्हें	साथ मालों	और बेटों के

وَجَعَلْنَاكُمْ	أَكْثَرَ	نَفِيرًا (6)	إِنْ	أَحْسَنْتُمْ	أَحْسَنْتُمْ	لِأَنْفُسِكُمْ قف
और कर दिया हमने तुम्हें	ज़्यादा	नफ़री/तादाद में	अगर	भलाई की तुमने	भलाई की तुमने	अपने नफ़्सों के लिए

وَإِنْ	أَسَأْتُمْ	فَلَهَا ط	فَإِذَا	جَاءَ	وَعْدُ	الْآخِرَةِ	لِيَسُوءُوا
और अगर	बुरा किया तुमने	तो अपने ही लिए है	फिर जब	आ जाएगा	वादा	दूसरी (बार का)	ताकि वो बिगाड़ दें

وُجُوهَكُمْ	وَلِيَدْخُلُوا	الْمَسْجِدَ	كَمَا	دَخَلُوهُ	أَوَّلَ	مَرَّةٍ
चहरे तुम्हारे	और ताकि वो दाख़िल हों	मस्जिद में	जैसा कि	वो दाख़िल हुए थे उसमें	पहली	बार

وَلِيُتَبِّرُوا	مَا	عَلَوْا	تَتْبِيرًا (7)	عَسَىٰ	رَبُّكُمْ	أَنْ	يَرْحَمَكُمْ ج
और ताकि वो तबाह कर दें	जिस पर	वो ग़लबा पाएं	बुरी तरह तबाह करना	उम्मीद है	रब तुम्हारा	कि	वो रहम करे तुम पर

وَإِنْ	عُدْتُمْ	عُدْنَا م	وَجَعَلْنَا	جَهَنَّمَ	لِلْكَافِرِينَ	حَصِيرًا (8)
और अगर	लौटोगे तुम	लौटेंगे हम	और बनाया हमने	जहन्नम को	काफ़िरों के लिए	क़ैदख़ाना

إِنَّ	هَٰذَا	الْقُرْآنَ	يَهْدِي	لِلَّتِي	هِيَ	أَقْوَمُ	وَيُبَشِّرُ
बेशक	ये	क़ुरआन	वो रहनुमाई करता है	उस (राह) के लिए	वो (जो)	सबसे ज़्यादा सीधी है	और वो खुशख़बरी देता है

الْمُؤْمِنِينَ	الَّذِينَ	يَعْمَلُونَ	الصَّالِحَاتِ	أَنَّ	لَهُمْ	أَجْرًا	كَبِيرًا (9) لا
ईमान वालों को	वो जो	अमल करते हैं	नेक	बेशक	उनके लिए	अजर है	बहुत बड़ा

وَأَنَّ	الَّذِينَ	لَا يُؤْمِنُونَ	بِالْآخِرَةِ	أَعْتَدْنَا	لَهُمْ	عَذَابًا
और बेशक	वो लोग जो	नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर	तैयार कर रखा है हमने	उनके लिए	अज़ाब

أَلِيمًا (10) ع	وَيَدْعُ	الْإِنْسَانُ	بِالشَّرِّ	دُعَاءَهُ	بِالْخَيْرِ ط	وَكَانَ
दर्दनाक	और दुआ करता है	इंसान	शर/बुराई की	(जैसा) दुआ करना उसका	ख़ैर/भलाई की	और है

وقف لازم

ع 1 10 1

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاِنْسَانُ	عَجُوْلًا ⑪	وَجَعَلْنَا	الَّيْلَ	وَالنَّهَارَ	اٰيَتَيْنِ	فَمَحَوْنَآ
इंसान	बहुत जल्द बाज़	और बनाया हमने	रात	और दिन को	दो निशानियां	तो मिटा दी हमने

اٰيَةَ	الَّيْلِ	وَجَعَلْنَآ	اٰيَةَ	النَّهَارِ	مُبْصِرَةً	لِّتَبْتَغُوْا	فَضْلًا
निशानी	रात की	और बनाई हमने	निशानी	दिन की	रोशन	ताकि तुम तलाश करो	फ़ज़्ल

مِّنْ رَّبِّكُمْ	وَلِتَعْلَمُوْا	عَدَدَ	السِّنِيْنَ	وَالْحِسَابَ ؕ	وَكُلَّ	شَيْءٍ
अपने रब का	और ताकि तुम जान लो	गिनती	सालों की	और हिसाब	और हर	चीज़ को

فَصَّلْنٰهُ	تَفْصِيْلًا ⑫	وَكُلَّ	اِنْسَانٍ	اَلْزَمْنٰهُ	طٰٓئِرَهٗ
खोल कर बयान किया हमने उसे	खोल कर बयान करना	और हर	इन्सान को	लाज़िम कर दिया हमने उसको	शगून उसका

فِيْ عُنُقِهٖ ؕ	وَنُخْرِجُ	لَهٗ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	كِتٰبًا	يَّلْقٰىهُ
उसकी गर्दन में	और हम निकालेंगे	उसके लिए	दिन	क़यामत के	एक किताब	वो पाएगा उसे

مَنْشُوْرًا ⑬	اِقْرَاْ	كِتٰبَكَ ؕ	كَفٰى	بِنَفْسِكَ	الْيَوْمَ	عَلَيْكَ	حَسِيْبًا ⑭ ؕ
नशर किया हुआ/खुला हुआ	पढ़ो	किताब अपनी	काफ़ी है	तेरा नफ़्स ही	आज	तुझ पर	हिसाब लेने वाला

مَنِ	اهْتَدٰى	فَاِنَّمَا	يَهْتَدِيْ	لِنَفْسِهٖ ۚ	وَمَنْ	ضَلَّ	فَاِنَّمَا
जो	हिदायत पाए	तो बेशक	वो हिदायत पाता है	अपने ही नफ़्स के लिए	और जो	गुमराह हुआ/भटका	तो बेशक

يَضِلُّ	عَلَيْهَا ؕ	وَلَا	تَزِرُ	وَازِرَةٌ	وِّزْرَ	اُخْرٰى ؕ	وَمَا
वो भटकता है	अपने ही ख़िलाफ़	और ना	बोझ उठाएगी	कोई बोझ उठाने वाली	बोझ	दूसरी का	और नहीं

كُنَّا	مُعَذِّبِيْنَ	حَتّٰى	نَبْعَثَ	رَسُوْلًا ⑮	وَاِذَآ	اَرَدْنَآ	اَنْ
हैं हम	अज़ाब देने वाले	यहां तक कि	हम भेजें	कोई रसूल	और जब	इरादा करते हैं हम	कि

نُّهْلِكَ	قَرْيَةً	اَمَرْنَا	مُتْرَفِيْهَا	فَفَسَقُوْا	فِيْهَا	فَحَقَّ
हम हलाक कर दें	किसी बस्ती को	हुक्म देते हैं हम	उसके ख़ुशहाल लोगों को	तो वो नाफ़रमानी करते हैं	उसमें	तो साबित हो जाती है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَيْهَا	الْقَوْلُ	فَدَمَّرْنٰهَا	تَدْمِيْرًا ⑯	وَكَمْ	اَهْلَكْنَا	مِنَ الْقُرُوْنِ
उस पर	बात	तो तबाह कर देते हैं हम उसे	तबाह कर देना	और कितनी ही	हलाक कीं हमने	उम्मतें/बस्तियां

مِنْۢ بَعْدِ	نُوْحٍ ؕ	وَكَفٰى	بِرَبِّكَ	بِذُنُوْبِ	عِبَادِهٖ	خَبِيْرًاۢ
बाद	नूह के	और काफ़ी है	रब आपका	गुनाहों की	अपने बंदों के	ख़ूब ख़बर रखने वाला

بَصِيْرًا ⑰	مَنْ	كَانَ	يُرِيْدُ	الْعَاجِلَةَ	عَجَّلْنَا	لَهٗ	فِيْهَا	مَا
ख़ूब देखने वाला	जो कोई	है	चाहता	जल्द मिलने वाली चीज़ को	जल्द देते हैं हम	उसे	उसमें	जो

نَشَآءُ	لِمَنْ	نُّرِيْدُ	ثُمَّ	جَعَلْنَا	لَهٗ	جَهَنَّمَ ۚ	يَصْلٰىهَا
हम चाहते हैं	जिसके लिए	हम चाहते हैं	फिर	बना देते हैं हम	उसके लिए	जहन्नम को	वो जलेगा उसमें

مَذْمُوْمًا	مَّدْحُوْرًا ⑱	وَمَنْ	اَرَادَ	الْاٰخِرَةَ	وَسَعٰى	لَهَا
मज़म्मत किया हुआ	रहमत से दूर किया हुआ	और जो	चाहे	आख़िरत को	और वो कोशिश करे	उसके लिए

سَعْيَهَا	وَهُوَ	مُؤْمِنٌ	فَاُولٰٓئِكَ	كَانَ	سَعْيُهُمْ	مَّشْكُوْرًا ⑲
(ज़रूरी) कोशिश उसकी	जबकि वो	मोमिन हो	तो यही लोग हैं	है	कोशिश उनकी	क़ाबिले क़द्र

كُلًّا	نُّمِدُّ	هٰٓؤُلَآءِ	وَهٰٓؤُلَآءِ	مِنْ عَطَآءِ	رَبِّكَ ؕ	وَمَا	كَانَ
हर एक को	हम मदद देते हैं	इनको (भी)	और उनको (भी)	अता में से	आपके रब की	और नहीं	है

عَطَآءُ	رَبِّكَ	مَحْظُوْرًا ⑳	اُنْظُرْ	كَيْفَ	فَضَّلْنَا	بَعْضَهُمْ
अता	आपके रब की	रोकी गई	देखो	किस तरह	फ़ज़ीलत दी हमने	उनके बाज़ को

عَلٰى بَعْضٍ ؕ	وَلَلْاٰخِرَةُ	اَكْبَرُ	دَرَجٰتٍ	وَّاَكْبَرُ	تَفْضِيْلًا ㉑	لَا
बाज़ पर	और यक़ीनन आख़िरत	ज़्यादा बड़ी है	दरजात में	और ज़्यादा बढ़कर है	फ़ज़ीलत में	ना

تَجْعَلْ	مَعَ اللّٰهِ	اِلٰهًا	اٰخَرَ	فَتَقْعُدَ	مَذْمُوْمًا	مَّخْذُوْلًا ㉒ ع
तुम बनाओ	साथ अल्लाह के	इलाह	दूसरा	वरना तुम बैठे रहोगे	मज़म्मत ज़दा	बेयारो मददगार

ع 2 12 2

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَقَضٰى	رَبُّكَ	اَلَّا	تَعْبُدُوْٓا	اِلَّآ	اِيَّاهُ	وَبِالْوَالِدَيْنِ	اِحْسَانًا ؕ
और फ़ैसला कर दिया है	आपके रब ने	कि ना	तुम इबादत करो	मगर	सिर्फ़ उसी की	और साथ वालिदैन के	एहसान करना

اِمَّا	يَبْلُغَنَّ	عِنْدَكَ	الْكِبَرَ	اَحَدُهُمَآ	اَوْ	كِلٰهُمَا	فَلَا
अगर	वो पहुंचें	तेरे पास	बुढ़ापे को	उन दोनों में से एक	या	वो दोनों	तो ना

تَقُلْ	لَّهُمَآ	اُفٍّ	وَّلَا	تَنْهَرْهُمَا	وَقُلْ	لَّهُمَا	قَوْلًا
तुम कहना	उन दोनों के लिए	उफ़	और ना	तुम झिड़कना उन दोनों को	और कहना	उन दोनों को	बात

كَرِيْمًا ﴿23﴾	وَاخْفِضْ	لَهُمَا	جَنَاحَ	الذُّلِّ	مِنَ الرَّحْمَةِ	وَقُلْ	
इज़्ज़त वाली/उम्दा	और झुकाए रखना	उन दोनों के लिए	बाज़ू	आजिज़ी के	रहमत से	और कहना	

رَّبِّ	ارْحَمْهُمَا	كَمَا	رَبَّيٰنِيْ	صَغِيْرًا ﴿24﴾ ؕ	رَبُّكُمْ	اَعْلَمُ
ऐ मेरे रब	रहम कीजिए इन दोनों पर	जैसा कि	इन दोनों ने परवरिश की मेरी	बचपन में	रब तुम्हारा	ज़्यादा जानता है

بِمَا	فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ	اِنْ	تَكُوْنُوْا	صٰلِحِيْنَ	فَاِنَّهٗ	كَانَ
उसे जो	तुम्हारे नफ़्सों में है	अगर	तुम होगे	नेक	तो यक़ीनन वो	है वो

لِلْاَوَّابِيْنَ	غَفُوْرًا ﴿25﴾	وَاٰتِ	ذَا الْقُرْبٰى	حَقَّهٗ	وَالْمِسْكِيْنَ
रुजूअ करने वालों के लिए	बहुत बख़्शने वाला	और दो	क़राबतदार को	हक़ उसका	और मिस्कीन को

وَابْنَ السَّبِيْلِ	وَلَا	تُبَذِّرْ	تَبْذِيْرًا ﴿26﴾	اِنَّ	الْمُبَذِّرِيْنَ	كَانُوْٓا
और मुसाफ़िर को	और ना	तुम बेजा ख़र्च करो	बेजा ख़र्च करना	बेशक	फ़ुज़ूल ख़र्च लोग	हैं वो

اِخْوَانَ	الشَّيٰطِيْنِ ؕ	وَكَانَ	الشَّيْطٰنُ	لِرَبِّهٖ	كَفُوْرًا ﴿27﴾	وَاِمَّا
भाई	शैतानों के	और है	शैतान	अपने रब का	बहुत नाशुक्रा	और अगर

تُعْرِضَنَّ	عَنْهُمُ	ابْتِغَآءَ	رَحْمَةٍ	مِّنْ رَّبِّكَ	تَرْجُوْهَا	فَقُلْ
तुम ऐराज़ करते हो	उनसे	चाहने को	रहमत	अपने रब की तरफ़ से	तुम उम्मीद रखते हो जिसकी	तो कहना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَّهُمْ	قَوْلًا	مَّيْسُوْرًا ﴿28﴾	وَلَا	تَجْعَلْ	يَدَكَ	مَغْلُوْلَةً	اِلٰى عُنُقِكَ
उनसे	बात	आसान	और ना	तुम रखो	हाथ अपना	बंधा हुआ	तरफ़ अपनी गर्दन के

وَلَا	تَبْسُطْهَا	كُلَّ	الْبَسْطِ	فَتَقْعُدَ	مَلُوْمًا	مَّحْسُوْرًا ﴿29﴾	اِنَّ
और ना	तुम फैला दो उसे	पूरा	फैला देना	पस तुम बैठ जाओगे	मलामत ज़दा	हसरत ज़दा होकर	बेशक

رَبَّكَ	يَبْسُطُ	الرِّزْقَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيَقْدِرُ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ
रब आपका	कुशादा करता है	रिज़्क़ को	जिसके लिए	वो चाहता है	और वो तंग कर देता है	बेशक वो	है वो

ع 3 8 3

بِعِبَادِهٖ	خَبِيْرًاۢ	بَصِيْرًا ﴿30﴾ ع	وَلَا	تَقْتُلُوْٓا	اَوْلَادَكُمْ	خَشْيَةَ	
अपने बंदों की	पूरी ख़बर रखने वाला	ख़ूब देखने वाला	और ना	तुम क़त्ल करो	औलाद अपनी	ख़ौफ़ से	

اِمْلَاقٍ ؕ	نَحْنُ	نَرْزُقُهُمْ	وَاِيَّاكُمْ ؕ	اِنَّ	قَتْلَهُمْ	كَانَ	خِطْاً
मुफ़लिसी के	हम	हम रिज़्क़ देते हैं उन्हें	और तुम्हें (भी)	बेशक	क़त्ल करना उनका	है	ख़ता

كَبِيْرًا ﴿31﴾	وَلَا	تَقْرَبُوا	الزِّنٰٓى	اِنَّهٗ	كَانَ	فَاحِشَةً ؕ	وَسَآءَ
बहुत बड़ी	और ना	तुम क़रीब जाओ	ज़िना के	यक़ीनन वो	है वो	बेहयाई	और बहुत बुरा

سَبِيْلًا ﴿32﴾	وَلَا	تَقْتُلُوا	النَّفْسَ	الَّتِىْ	حَرَّمَ	اللّٰهُ	اِلَّا
रास्ता	और ना	तुम क़त्ल करो	किसी जान को	वो जो	हराम की	अल्लाह ने	मगर

بِالْحَقِّ ؕ	وَمَنْ	قُتِلَ	مَظْلُوْمًا	فَقَدْ	جَعَلْنَا	لِوَلِيِّهٖ	سُلْطٰنًا
साथ हक़ के	और जो कोई	क़त्ल किया गया	मज़लूम	तो तहक़ीक़	बनाया हमने	उसके वली के लिए	इख़्तियार/क़ुव्वत

فَلَا	يُسْرِفْ	فِّى الْقَتْلِ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	مَنْصُوْرًا ﴿33﴾	وَلَا	تَقْرَبُوْا
पस ना	वो ज़्यादती करे	क़त्ल में	बेशक वो	है वो	मदद किया हुआ	और ना	तुम क़रीब जाओ

مَالَ	الْيَتِيْمِ	اِلَّا	بِالَّتِىْ	هِىَ	اَحْسَنُ	حَتّٰى	يَبْلُغَ
माले	यतीम के	मगर	साथ उस तरीक़े के	वो जो	ज़्यादा अच्छा है	यहां तक कि	वो पहुंच जाए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَشُدَّهٗ ۪	وَ اَوْفُوْا	بِالْعَهْدِ ۚ	اِنَّ	الْعَهْدَ	كَانَ	مَسْـُٔوْلًا ﴿34﴾
अपनी जवानी को	और पूरा करो	अहद को	बेशक	अहद	है	पूछा जाने वाला

وَ اَوْفُوا	الْكَيْلَ	اِذَا	كِلْتُمْ	وَزِنُوْا	بِالْقِسْطَاسِ	الْمُسْتَقِيْمِ ؕ
और पूरा करो	पैमाना	जब	नापो तुम	और तौलो	साथ तराज़ू	सीधी के

ذٰلِكَ	خَيْرٌ	وَّ اَحْسَنُ	تَاْوِيْلًا ﴿35﴾	وَلَا	تَقْفُ	مَا	لَيْسَ
ये	बेहतर है	और ज़्यादा अच्छा है	अंजाम के ऐतबार से	और ना	तुम पीछे पड़ो	उसके जो	नहीं

لَكَ	بِهٖ	عِلْمٌ ؕ	اِنَّ	السَّمْعَ	وَالْبَصَرَ	وَالْفُؤَادَ	كُلُّ
तुम्हें	उसका	कोई इल्म	बेशक	कान	और आंख	और दिल	हर एक

اُولٰٓئِكَ	كَانَ	عَنْهُ	مَسْـُٔوْلًا ﴿36﴾	وَلَا	تَمْشِ	فِى الْاَرْضِ	مَرَحًا ۚ
उनमें से	है	उसके बारे में	सवाल किया जाने वाला	और ना	तुम चलो	ज़मीन में	इतराते हुए

اِنَّكَ	لَنْ	تَخْرِقَ	الْاَرْضَ	وَلَنْ	تَبْلُغَ	الْجِبَالَ	طُوْلًا ﴿37﴾
बेशक तुम	हरगिज़ नहीं	तुम फाड़ सकते	ज़मीन को	और हरगिज़ नहीं	तुम पहुंच सकते	पहाड़ों को	लम्बाई में

كُلُّ ذٰلِكَ	كَانَ	سَيِّئُهٗ	عِنْدَ رَبِّكَ	مَكْرُوْهًا ﴿38﴾	ذٰلِكَ
ये सब (काम)	है	बुराई इनकी	आपके रब के नज़दीक	मकरूह/नापसंदीदा	ये

مِمَّآ	اَوْحٰٓى	اِلَيْكَ	رَبُّكَ	مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ	وَلَا	تَجْعَلْ	مَعَ
उसमें से है जो	वही की	तरफ़ आपके	आपके रब ने	हिक्मत में से	और ना	तुम बनाओ	साथ

اللّٰهِ	اِلٰهًا	اٰخَرَ	فَتُلْقٰى	فِىْ جَهَنَّمَ	مَلُوْمًا	مَّدْحُوْرًا ﴿39﴾
अल्लाह के	कोई इलाह	दूसरा	वरना तुम डाल दिए जाओगे	जहन्नम में	मलामत किए हुए	धुतकारे हुए

اَفَاَصْفٰىكُمْ	رَبُّكُمْ	بِالْبَنِيْنَ	وَاتَّخَذَ	مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ	اِنَاثًا ؕ
क्या फिर चुन लिया तुम्हें	तुम्हारे रब ने	साथ बेटों के	और उसने बना लिया	फ़रिश्तों को	बेटियां

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 4 10 4

اِنَّكُمْ	لَتَقُوْلُوْنَ	قَوْلًا	عَظِيْمًا ع (40)	وَلَقَدْ	صَرَّفْنَا	فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
बेशक तुम	अलबत्ता तुम कहते हो	बात	बहुत बड़ी	और अलबत्ता तहक़ीक़	फेर-फेर कर लाए हैं हम	इस क़ुरआन में

لِيَذَّكَّرُوْا ؕ	وَمَا	يَزِيْدُهُمْ	اِلَّا	نُفُوْرًا (41)	قُلْ	لَّوْ	كَانَ
ताकि वो नसीहत पकड़ें	और नहीं	वो ज़्यादा करता उन्हें	मगर	नफ़रत में	कह दीजिए	अगर	होते

مَعَهٗٓ	اٰلِهَةٌ	كَمَا	يَقُوْلُوْنَ	اِذًا	لَّابْتَغَوْا	اِلٰى	ذِى الْعَرْشِ
साथ उसके	कुछ इलाह	जैसा कि	वो कहते हैं	तब	अलबत्ता वो तलाश करते	तरफ़	अर्श वाले के

سَبِيْلًا (42)	سُبْحٰنَهٗ	وَتَعٰلٰى	عَمَّا	يَقُوْلُوْنَ	عُلُوًّا	كَبِيْرًا (43)	تُسَبِّحُ
कोई रास्ता	पाक है वो	और वो बुलंदतर है	उससे जो	वो कहते हैं	बहुत बुलंद	बहुत बड़ा	तस्बीह कर रहे हैं

لَهُ	السَّمٰوٰتُ	السَّبْعُ	وَالْاَرْضُ	وَمَنْ	فِيْهِنَّ ؕ	وَاِنْ	مِّنْ شَىْءٍ
उसके लिए	आसमान	सात	और ज़मीन	और वो जो	इनमें हैं	और नहीं	कोई चीज़

اِلَّا	يُسَبِّحُ	بِحَمْدِهٖ	وَلٰكِنْ	لَّا تَفْقَهُوْنَ	تَسْبِيْحَهُمْ ؕ	اِنَّهٗ
मगर	वो तस्बीह कर रही है	साथ उसकी हम्द के	और लेकिन	नहीं तुम समझते	तस्बीह उनकी	बेशक वो

كَانَ	حَلِيْمًا	غَفُوْرًا (44)	وَاِذَا	قَرَاْتَ	الْقُرْاٰنَ	جَعَلْنَا	بَيْنَكَ
है वो	बहुत इल्म वाला	बहुत बख़्शने वाला	और जब	पढ़ते हैं आप	क़ुरआन	बना देते हैं हम	दर्मियान आपके

وَبَيْنَ	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ	حِجَابًا	مَّسْتُوْرًا (45) لا
और दर्मियान	उन लोगों के जो	नहीं वो ईमान रखते	आख़िरत पर	एक पर्दा	छुपा हुआ

وَّجَعَلْنَا	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	اَكِنَّةً	اَنْ	يَّفْقَهُوْهُ	وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ	وَقْرًا ؕ
और डाल देते हैं हम	उनके दिलों पर	पर्दे	कि	(ना) वो समझ सकें उसे	और उनके कानों में	बोझ

وَاِذَا	ذَكَرْتَ	رَبَّكَ	فِى الْقُرْاٰنِ	وَحْدَهٗ	وَلَّوْا	عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ
और जब	ज़िक्र करते हैं आप	अपने रब का	क़ुरआन में	अकेले उसी का	वो फिर जाते हैं	अपनी पुश्तों पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَسْتَمِعُوْنَ	اِذْ	بِهٖٓ	يَسْتَمِعُوْنَ	بِمَا	اَعْلَمُ	نَحْنُ	نُفُوْرًا (46)
वो ग़ौर से सुनते हैं	जब	साथ उसके	वो ग़ौर से सुनते हैं	उसको जो	ज़्यादा जानते हैं	हम	नफ़रत करते हुए

اِنْ	الظّٰلِمُوْنَ	يَقُوْلُ	اِذْ	نَجْوٰٓى	هُمْ	وَاِذْ	اِلَيْكَ
नहीं	ज़ालिम लोग	कहते हैं	जब	सरगोशियां (करते हैं)	वो	और जब	तरफ़ आपके

ضَرَبُوْا	كَيْفَ	اُنْظُرْ	مَّسْحُوْرًا (47)	رَجُلًا	اِلَّا	تَتَّبِعُوْنَ
उन्होंने बयान कीं	किस तरह	देखो	सहरज़दा की	एक मर्द	मगर	तुम पैरवी करते

وَقَالُوْٓا	سَبِيْلًا (48)	يَسْتَطِيْعُوْنَ	فَلَا	فَضَلُّوْا	الْاَمْثَالَ	لَكَ
और वो कहते हैं	किसी रास्ते की	वो इस्तिताअत रखते	पस नहीं	तो वो भटक गए	मिसालें	आपके लिए

ربع

خَلْقًا	لَمَبْعُوْثُوْنَ	ءَاِنَّا	وَّرُفَاتًا	عِظَامًا	كُنَّا	ءَاِذَا
पैदा करके	अलबत्ता उठाए जाएंगे	क्या बेशक हम	और चूरा-चूरा	हड्डियां	होंगे हम	क्या जब

خَلْقًا	اَوْ	حَدِيْدًا (50) ۙ	اَوْ	حِجَارَةً	كُوْنُوْا	قُلْ	جَدِيْدًا (49)
कोई मख़्लूक़	या	लोहा	या	पत्थर	हो जाओ	कह दीजिए	नए सिरे से

قُلِ	يُّعِيْدُنَا ؕ	مَنْ	فَسَيَقُوْلُوْنَ	فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ	يَكْبُرُ	مِّمَّا
कह दीजिए	लौटाएगा हमें	कौन	पस अनक़रीब वो कहेंगे	तुम्हारे सीनों में	बड़ी हो	उससे जो

رُءُوْسَهُمْ	اِلَيْكَ	فَسَيُنْغِضُوْنَ	مَرَّةٍ ۚ	اَوَّلَ	فَطَرَكُمْ	الَّذِيْ
अपने सरों को	तरफ़ आपके	पस अनक़रीब वो हिलाएंगे	बार	पहली	पैदा किया तुम्हें	वो जिसने

قَرِيْبًا (51)	يَّكُوْنَ	اَنْ	عَسٰٓى	قُلْ	هُوَ ؕ	مَتٰى	وَيَقُوْلُوْنَ
क़रीब ही	हो वो	कि	उम्मीद है	कह दीजिए	वो	कब है	और वो कहेंगे

لَّبِثْتُمْ	اِنْ	وَتَظُنُّوْنَ	بِحَمْدِهٖ	فَتَسْتَجِيْبُوْنَ	يَدْعُوْكُمْ	يَوْمَ
ठहरे तुम	कि नहीं	और तुम समझ जाओगे	साथ उसकी हम्द के	पस तुम जवाब दोगे	वो पुकारेगा तुम्हें	जिस दिन

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 12 5

اِلَّا	قَلِيْلًا ﴿52﴾ ع	وَقُلْ	لِّعِبَادِيْ	يَقُوْلُوا	الَّتِيْ	هِيَ	اَحْسَنُ ؕ
मगर	बहुत थोड़ा	और कह दीजिए	मेरे बंदों को	वो कहें	वो (बात) जो	वो	ज़्यादा अच्छी हो

اِنَّ	الشَّيْطٰنَ	يَنْزَغُ	بَيْنَهُمْ ؕ	اِنَّ	الشَّيْطٰنَ	كَانَ	لِلْاِنْسَانِ
बेशक	शैतान	फ़साद डालता है	दर्मियान उनके	यक़ीनन	शैतान	है	इंसान के लिए

عَدُوًّا	مُّبِيْنًا ﴿53﴾	رَبُّكُمْ	اَعْلَمُ	بِكُمْ ؕ	اِنْ	يَّشَاْ	يَرْحَمْكُمْ
दुश्मन	खुला	रब तुम्हारा	ख़ूब जानता है	तुम्हें	अगर	वो चाहे	वो रहम करे तुम पर

اَوْ	اِنْ	يَّشَاْ	يُعَذِّبْكُمْ ؕ	وَمَآ	اَرْسَلْنٰكَ	عَلَيْهِمْ	وَكِيْلًا ﴿54﴾
या	अगर	वो चाहे	वो अज़ाब दे तुम्हें	और नहीं	भेजा हमने आपको	उन पर	ज़िम्मेदार बनाकर

وَرَبُّكَ	اَعْلَمُ	بِمَنْ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَلَقَدْ	فَضَّلْنَا
और रब आपका	ख़ूब जानता है	उसे जो	आसमानों में	और ज़मीन में है	और अलबत्ता तहक़ीक़	फ़ज़ीलत दी हमने

بَعْضَ	النَّبِيّٖنَ	عَلٰى بَعْضٍ	وَّاٰتَيْنَا	دَاوٗدَ	زَبُوْرًا ﴿55﴾	قُلِ
बाज़	नबियों को	बाज़ पर	और दी हमने	दाऊद को	ज़बूर	कह दीजिए

ادْعُوا	الَّذِيْنَ	زَعَمْتُمْ	مِّنْ دُوْنِهٖ	فَلَا	يَمْلِكُوْنَ	كَشْفَ	الضُّرِّ
पुकारो	उनको जिन्हें	समझते हो तुम	उसके सिवा (माबूद)	तो नहीं	वो मालिक हो सकते	दूर करने के	तकलीफ़ को

عَنْكُمْ	وَلَا	تَحْوِيْلًا ﴿56﴾	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	يَبْتَغُوْنَ
तुमसे	और ना	बदलने के	ये लोग	जिन्हें	वो पुकारते हैं	वो (ख़ुद) तलाश करते हैं

اِلٰى رَبِّهِمُ	الْوَسِيْلَةَ	اَيُّهُمْ	اَقْرَبُ	وَيَرْجُوْنَ	رَحْمَتَهٗ
तरफ़ अपने रब के	वसीला/ज़रिया	कौन उनमें से	ज़्यादा क़रीब है	और वो उम्मीद रखते हैं	उसकी रहमत की

وَيَخَافُوْنَ	عَذَابَهٗ ؕ	اِنَّ	عَذَابَ	رَبِّكَ	كَانَ	مَحْذُوْرًا ﴿57﴾
और वो डरते हैं	उसके अज़ाब से	बेशक	अज़ाब	आपके रब का	है	डरने की चीज़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاِنْ	مِّنْ قَرْيَةٍ	اِلَّا	نَحْنُ	مُهْلِكُوْهَا	قَبْلَ	يَوْمِ	الْقِيٰمَةِ
और नहीं	कोई बस्ती	मगर	हम	हलाक करने वाले हैं उसे	क़ब्ल	दिन	क़यामत के

اَوْ	مُعَذِّبُوْهَا	عَذَابًا	شَدِيْدًا ؕ	كَانَ	ذٰلِكَ	فِي الْكِتٰبِ
या	अज़ाब देने वाले हैं उसे	अज़ाब	सख़्त	है	ये	किताब में

مَسْطُوْرًا ﴿58﴾	وَمَا	مَنَعَنَآ	اَنْ	نُّرْسِلَ	بِالْاٰيٰتِ	اِلَّآ	اَنْ
लिखा हुआ	और नहीं	रोका हमें	कि	हम भेजें	निशानियां	मगर	(इस बात ने) कि

كَذَّبَ	بِهَا	الْاَوَّلُوْنَ ؕ	وَاٰتَيْنَا	ثَمُوْدَ	النَّاقَةَ	مُبْصِرَةً
झुठलाया	उन्हें	पहलों ने	और दी हमने	समूद को	ऊंटनी	वाज़ेह निशानी

فَظَلَمُوْا	بِهَا ؕ	وَمَا	نُرْسِلُ	بِالْاٰيٰتِ	اِلَّا	تَخْوِيْفًا ﴿59﴾	وَاِذْ
तो उन्होंने ज़ुल्म किया	साथ उसके	और नहीं	हम भेजते	निशानियां	मगर	डराने के लिए	और जब

قُلْنَا	لَكَ	اِنَّ	رَبَّكَ	اَحَاطَ	بِالنَّاسِ ؕ	وَمَا	جَعَلْنَا
कहा हमने	आपको	बेशक	आपके रब ने	घेर लिया है	लोगों को	और नहीं	बनाया हमने

الرُّءْيَا	الَّتِيْٓ	اَرَيْنٰكَ	اِلَّا	فِتْنَةً	لِّلنَّاسِ	وَالشَّجَرَةَ	الْمَلْعُوْنَةَ
इस मंज़र को	वो जो	दिखाया हमने आपको	मगर	एक आज़माइश	लोगों के लिए	और उस दरख़्त को (भी)	जो लानत किया गया

فِي الْقُرْاٰنِ ؕ	وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ	فَمَا	يَزِيْدُهُمْ	اِلَّا	طُغْيَانًا	كَبِيْرًا ﴿60﴾ ع	
क़ुरआन में	और हम डराते हैं उन्हें	तो नहीं	वो ज़्यादा करता उन्हें	मगर	सरकशी में	बहुत बड़ी	

ع 6 8 6

وَاِذْ	قُلْنَا	لِلْمَلٰٓئِكَةِ	اسْجُدُوْا	لِاٰدَمَ	فَسَجَدُوْٓا	اِلَّآ	اِبْلِيْسَ ؕ
और जब	कहा हमने	फ़रिश्तों से	सज्दा करो	आदम को	तो उन्होंने सज्दा किया	सिवाय	इब्लीस के

قَالَ	ءَاَسْجُدُ	لِمَنْ	خَلَقْتَ	طِيْنًا ﴿61﴾ ج	قَالَ	اَرَءَيْتَكَ	هٰذَا
उसने कहा	क्या मैं सज्दा करूं	उसको जिसे	पैदा किया तूने	मिट्टी से	उसने कहा	क्या देखा तूने	ये

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِیْ	كَرَّمْتَ	عَلَیَّ	لَىِٕنْ	اَخَّرْتَنِ	اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ
जिसे	इज़्ज़त दी तूने	मुझ पर	अलबत्ता अगर	मोहलत दी तूने मुझे	क़यामत के दिन तक

لَاَحْتَنِكَنَّ	ذُرِّیَّتَهٗٓ	اِلَّا	قَلِیْلًا ﴿62﴾	قَالَ	اذْهَبْ	فَمَنْ	تَبِعَكَ
अलबत्ता मैं ज़रूर क़ाबू में कर लुंगा	इसकी औलाद को	मगर	बहुत थोड़े	फ़रमाया	जा	पस जो कोई	पैरवी करे तेरी

مِنْهُمْ	فَاِنَّ	جَهَنَّمَ	جَزَآؤُكُمْ	جَزَآءً	مَّوْفُوْرًا ﴿63﴾	وَاسْتَفْزِزْ	مَنِ
इनमें से	तो बेशक	जहन्नम	बदला है तुम्हारा	बदला	पूरा-पूरा	और बहका ले	जिसे

اسْتَطَعْتَ	مِنْهُمْ	بِصَوْتِكَ	وَاَجْلِبْ	عَلَیْهِمْ	بِخَیْلِكَ	وَرَجِلِكَ
इस्तिताअत रखता है तू	उनमें से	साथ अपनी आवाज़ के	और चढ़ा ला	उन पर	सवार अपने	और प्यादे अपने

وَشَارِكْهُمْ	فِی الْاَمْوَالِ	وَالْاَوْلَادِ	وَعِدْهُمْ ؕ	وَمَا	یَعِدُهُمُ
और शरीक हो जा उनका	मालों में	और औलाद में	और वादा कर उनसे	और नहीं	वादा करता उनसे

الشَّیْطٰنُ	اِلَّا	غُرُوْرًا ﴿64﴾	اِنَّ	عِبَادِیْ	لَیْسَ	لَكَ	عَلَیْهِمْ
शैतान	मगर	धोखे का	बेशक	मेरे बंदे	नहीं है	तेरे लिए	उन पर

سُلْطٰنٌ ؕ	وَكَفٰى	بِرَبِّكَ	وَكِیْلًا ﴿65﴾	رَبُّكُمُ	الَّذِیْ	یُزْجِیْ	لَكُمُ
कोई ज़ोर	और काफ़ी है	रब आपका	कारसाज़	रब तुम्हारा	वो है जो	चलाता है	तुम्हारे लिए

الْفُلْكَ	فِی الْبَحْرِ	لِتَبْتَغُوْا	مِنْ فَضْلِهٖ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	بِكُمْ
कश्तियों को	समुन्दर में	ताकि तुम तलाश करो	उसके फ़ज़्ल से	यक़ीनन वो	है वो	तुम पर

رَحِیْمًا ﴿66﴾	وَاِذَا	مَسَّكُمُ	الضُّرُّ	فِی الْبَحْرِ	ضَلَّ	مَنْ	تَدْعُوْنَ
निहायत रहम करने वाला	और जब	पहुंचती है तुम्हें	तकलीफ़	समुन्दर में	गुम हो जाते हैं	वो जिन्हें	तुम पुकारते हो

اِلَّآ	اِیَّاهُ ۚ	فَلَمَّا	نَجّٰىكُمْ	اِلَى الْبَرِّ	اَعْرَضْتُمْ ؕ	وَكَانَ
मगर	सिर्फ़ वो ही	तो जब	वो निजात देता है तुम्हें	तरफ़ ख़ुश्की के	तो ऐराज़ करते हो तुम	और है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاِنْسَانُ	كَفُوْرًا ﴿67﴾	اَفَاَمِنْتُمْ	اَنْ	يَّخْسِفَ	بِكُمْ	جَانِبَ الْبَرِّ
इंसान	बड़ा नाशुक्रा	क्या बेख़ौफ़ हो गए तुम	कि	वो धंसा दे	तुम्हें	ख़ुश्की की जानिब

اَوْ	يُرْسِلَ	عَلَيْكُمْ	حَاصِبًا	ثُمَّ	لَا تَجِدُوْا	لَكُمْ	وَكِيْلًا ﴿68﴾ لا
या	वो भेज दे	तुम पर	पत्थर बरसाने वाली आंधी	फिर	ना तुम पाओगे	अपने लिए	कोई कारसाज़

اَمْ	اَمِنْتُمْ	اَنْ	يُّعِيْدَكُمْ	فِيْهِ	تَارَةً اُخْرٰى	فَيُرْسِلَ
या	बेख़ौफ़ हो गए तुम	कि	वो लौटाए तुम्हें	उसमें	दूसरी मर्तबा	फिर वो भेजे

عَلَيْكُمْ	قَاصِفًا	مِّنَ الرِّيْحِ	فَيُغْرِقَكُمْ	بِمَا	كَفَرْتُمْ لا	ثُمَّ
तुम पर	तोड़-फोड़ देने वाली	हवा में से	फिर वो ग़र्क़ कर दे तुम्हें	बवजह उसके जो	नाशुक्री की तुमने	फिर

لَا تَجِدُوْا	لَكُمْ	عَلَيْنَا	بِهٖ	تَبِيْعًا ﴿69﴾	وَلَقَدْ	كَرَّمْنَا
ना पाओ तुम	अपने लिए	हमारे ख़िलाफ़	उसमें	कोई पीछा करने वाला	और अल्बत्ता तहक़ीक़	इज़्ज़त दी हमने

بَنِيْٓ اٰدَمَ	وَحَمَلْنٰهُمْ	فِي الْبَرِّ	وَالْبَحْرِ	وَرَزَقْنٰهُمْ	مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
बनी आदम को	और सवार किया हमने उन्हें	ख़ुश्की में	और समुन्दर में	और रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	पाकीज़ा चीज़ों से

وَفَضَّلْنٰهُمْ	عَلٰى كَثِيْرٍ	مِّمَّنْ	خَلَقْنَا	تَفْضِيْلًا ﴿70﴾ ع	يَوْمَ
और फ़ज़ीलत दी हमने उन्हें	कसीर तादाद पर	उनमें से जो	पैदा किए हमने	बड़ी फ़ज़ीलत देना	जिस दिन

ع 7 10 7

نَدْعُوْا	كُلَّ	اُنَاسٍ	بِاِمَامِهِمْ ج	فَمَنْ	اُوْتِيَ	كِتٰبَهٗ	بِيَمِيْنِهٖ
हम बुलाऐंगे	सब	लोगों को	साथ उनके इमाम के	तो जो कोई	दिया गया	किताब अपनी	अपने दाऐं हाथ में

فَاُولٰٓئِكَ	يَقْرَءُوْنَ	كِتٰبَهُمْ	وَلَا	يُظْلَمُوْنَ	فَتِيْلًا ﴿71﴾	وَمَنْ	كَانَ
तो यही लोग हैं	जो पढ़ेंगे	किताब अपनी	और ना	वो ज़ुल्म किए जाऐंगे	धागे बराबर	और जो कोई	है

فِيْ هٰذِهٖٓ	اَعْمٰى	فَهُوَ	فِي الْاٰخِرَةِ	اَعْمٰى	وَاَضَلُّ	سَبِيْلًا ﴿72﴾
इस (दुनिया) में	अंधा	तो वो	आख़िरत में	अंधा (होगा)	और सबसे ज़्यादा भटका हुआ	रास्ते से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِتَفْتَرِیَ	اِلَیْكَ	اَوْحَیْنَآ	عَنِ الَّذِیْٓ	لَیَفْتِنُوْنَكَ	كَادُوْا	وَاِنْ
ताकि आप गढ़ लाएं	तरफ़ आपके	वही की हमने	उससे जो	अलबत्ता वो फ़ितने में डालें आपको	वो क़रीब थे कि	और बेशक

اَنْ	وَلَوْلَآ	خَلِیْلًا (73)	لَّاتَّخَذُوْكَ	وَاِذًا	غَیْرَهٗ ۖ ق	عَلَیْنَا
ये कि	और अगर ना होता	दिली दोस्त	ज़रूर वो बना लेते आपको	और तब	सिवाए उस (वही) के	हम पर

اِذًا	قَلِیْلًا (74) ۙ	شَیْـًٔا	اِلَیْهِمْ	تَرْكَنُ	كِدْتَّ	لَقَدْ	ثَبَّتْنٰكَ
तब	थोड़ा सा	कुछ	तरफ़ उनके	कि आप झुक जाते	क़रीब थे आप	अलबत्ता तहक़ीक़	हम साबित क़दम रखते आपको

لَا تَجِدُ	ثُمَّ	الْمَمَاتِ	وَضِعْفَ	الْحَیٰوةِ	ضِعْفَ	لَّاَذَقْنٰكَ
ना आप पाते	फिर	मौत का	और दोहरा	ज़िंदगी का	दोगुना (अज़ाब)	अलबत्ता चखाते हम आपको

مِنَ الْاَرْضِ	لَیَسْتَفِزُّوْنَكَ	كَادُوْا	وَاِنْ	نَصِیْرًا (75)	عَلَیْنَا	لَكَ
ज़मीन से	अलबत्ता वो क़दम उखाड़ दें आपके	वो क़रीब थे कि	और बेशक	कोई मददगार	हमारे ख़िलाफ़	अपने लिए

قَلِیْلًا (76)	اِلَّا	خِلٰفَكَ	لَّا یَلْبَثُوْنَ	وَاِذًا	مِنْهَا	لِیُخْرِجُوْكَ
थोड़ा सा	मगर	बाद आपके	ना वो ठहरते	और तब	उससे	ताकि वो निकाल दें आपको

تَجِدُ	وَلَا	مِنْ رُّسُلِنَا	قَبْلَكَ	اَرْسَلْنَا	قَدْ	مَنْ	سُنَّةَ
आप पाएंगे	और ना	अपने रसूलों में से	आप से पहले	भेजा हमने	तहक़ीक़	उनका जिन्हें	तरीक़ा

ع 8 7 8

اِلٰی غَسَقِ	الشَّمْسِ	لِدُلُوْكِ	الصَّلٰوةَ	اَقِمِ	تَحْوِیْلًا (77) ع	لِسُنَّتِنَا
अंधेरे तक	सूरज के	ढलने के वक़्त से	नमाज़	क़ायम कीजिए	कोई तब्दीली	हमारे तरीक़े में

مَشْهُوْدًا (78)	كَانَ	الْفَجْرِ	قُرْاٰنَ	اِنَّ	الْفَجْرِ ط	وَقُرْاٰنَ	الَّیْلِ
हाज़िर किया गया	है	फ़ज्र का	क़ुरआन	बेशक	फ़ज्र का	और क़ुरआन	रात के

اَنْ	عَسٰٓی	لَّكَ ۖ ق	نَافِلَةً	بِهٖ	فَتَهَجَّدْ	وَمِنَ الَّیْلِ
कि	उम्मीद है	आपके लिए	नफ़िल/ज़ायद हैं	साथ इस (क़ुरआन) के	पस तहज्जुद पढ़ा कीजिए	और कुछ हिस्सा रात का

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَّبْعَثَكَ	رَبُّكَ	مَقَامًا	مَّحْمُوْدًا ﴿79﴾	وَقُلْ	رَّبِّ	اَدْخِلْنِيْ
खड़ा कर दे आपको	रब आपका	मक़ामे	महमूद पर	और आप कह दीजिए	ऐ मेरे रब	दाख़िल कर मुझे

مُدْخَلَ	صِدْقٍ	وَّاَخْرِجْنِيْ	مُخْرَجَ	صِدْقٍ	وَّاجْعَلْ	لِّيْ
दाख़िल करना	सच्चा	और निकाल मुझे	निकालना	सच्चा	और बना दे	मेरे लिए

مِنْ لَّدُنْكَ	سُلْطٰنًا	نَّصِيْرًا ﴿80﴾	وَقُلْ	جَآءَ	الْحَقُّ	وَزَهَقَ
अपने पास से	क़ुव्वत	मददगार	और कह दीजिए	आ गया	हक़	और मिट गया

الْبَاطِلُ ؕ	اِنَّ	الْبَاطِلَ	كَانَ	زَهُوْقًا ﴿81﴾	وَنُنَزِّلُ	مِنَ الْقُرْاٰنِ
बातिल	बेशक	बातिल	है	मिट जाने वाला	और हम नाज़िल करते हैं	क़ुरआन से

مَا	هُوَ	شِفَآءٌ	وَّرَحْمَةٌ	لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ	وَلَا	يَزِيْدُ	الظّٰلِمِيْنَ
जो	वो	शिफ़ा	और रहमत है	ईमान लाने वालों के लिए	और नहीं	वो ज़्यादा करता	ज़ालिमों को

اِلَّا	خَسَارًا ﴿82﴾	وَاِذَآ	اَنْعَمْنَا	عَلَى الْاِنْسَانِ	اَعْرَضَ	وَنَا
मगर	ख़सारे में	और जब	इनाम करते हैं हम	इंसान पर	वो ऐराज़ करता है	और वो दूर कर लेता है

بِجَانِبِهٖ ۚ	وَاِذَا	مَسَّهُ	الشَّرُّ	كَانَ	يَـُٔوْسًا ﴿83﴾	قُلْ	كُلٌّ
पहलू अपना	और जब	पहुंचती है उसे	तकलीफ़	हो जाता है वो	बहुत मायूस	कह दीजिए	हर एक

يَّعْمَلُ	عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ	فَرَبُّكُمْ	اَعْلَمُ	بِمَنْ	هُوَ	اَهْدٰى
अमल करता है	अपने तरीक़े पर	तो रब तुम्हारा	ज़्यादा जानता है	उसे जो	वो	ज़्यादा हिदायत याफ़्ता है

سَبِيْلًا ﴿84﴾ ع	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ	عَنِ الرُّوْحِ ؕ	قُلِ	الرُّوْحُ	مِنْ اَمْرِ
रास्ते (के ऐतबार से)	और वो सवाल करते हैं आपसे	रूह के बारे में	कह दीजिए	रूह	हुक्म से है

ع 7 9

رَبِّيْ	وَمَآ	اُوْتِيْتُمْ	مِّنَ الْعِلْمِ	اِلَّا	قَلِيْلًا ﴿85﴾	وَلَئِنْ	شِئْنَا
मेरे रब के	और नहीं	दिए गए तुम	इल्म में से	मगर	बहुत थोड़ा	और अलबत्ता अगर	चाहें हम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَنَذْهَبَنَّ	بِالَّذِیْٓ	اَوْحَیْنَآ	اِلَیْكَ	ثُمَّ	لَا تَجِدُ	لَكَ	بِهٖ
अलबत्ता हम ज़रुर ले जाऐं	उसे जो	वही की हमने	तरफ़ आपके	फिर	ना आप पाऐंगे	अपने लिए	साथ उसके

عَلَیْنَا	وَكِیْلًا ﴿86﴾	اِلَّا	رَحْمَةً	مِّنْ رَّبِّكَ ؕ	اِنَّ	فَضْلَهٗ
हमारे (मुक़ाबले) पर	कोई कारसाज़	सिवाए	रहमत के	आपके रब की तरफ़ से	बेशक	फ़ज़्ल उसका

كَانَ	عَلَیْكَ	كَبِیْرًا ﴿87﴾	قُلْ	لَّىِٕنِ	اجْتَمَعَتِ	الْاِنْسُ	وَالْجِنُّ
है	आप पर	बहुत बड़ा	कह दीजिए	अलबत्ता अगर	जमा हो जाऐं	इंसान	और जिन्न

عَلٰٓى	اَنْ	یَّاْتُوْا	بِمِثْلِ	هٰذَا	الْقُرْاٰنِ	لَا یَاْتُوْنَ	بِمِثْلِهٖ
इस (बात) पर	कि	वो ले आऐं	मानिंद	इस	क़ुरआन के	ना वो ला सकेंगे	इसकी तरह का

وَلَوْ	كَانَ	بَعْضُهُمْ	لِبَعْضٍ	ظَهِیْرًا ﴿88﴾	وَلَقَدْ	صَرَّفْنَا
और अगरचे	हों	बाज़ उनके	बाज़ के लिए	मददगार	और अलबत्ता तहक़ीक़	फेर-फेर कर लाते हैं हम

لِلنَّاسِ	فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ	مِنْ كُلِّ	مَثَلٍ ؕ	فَاَبٰٓى	اَكْثَرُ	النَّاسِ
लोगों के लिए	इस क़ुरआन में	हर तरह की	मिसाल	पस इंकार किया	अक्सर	लोगों ने

اِلَّا	كُفُوْرًا ﴿89﴾	وَقَالُوْا	لَنْ	نُّؤْمِنَ	لَكَ	حَتّٰى	تَفْجُرَ
सिवाए	कुफ़्र करने के	और उन्होंने कहा	हरगिज़ नहीं	हम ईमान लाऐंगे	तुम पर	यहां तक कि	तुम जारी करो

لَنَا	مِنَ الْاَرْضِ	یَنْۢبُوْعًا ﴿90﴾	اَوْ	تَكُوْنَ	لَكَ	جَنَّةٌ
हमारे लिए	ज़मीन से	एक चश्मा	या	हो	तुम्हारे लिए	एक बाग़

مِّنْ نَّخِیْلٍ	وَّعِنَبٍ	فَتُفَجِّرَ	الْاَنْهٰرَ	خِلٰلَهَا	تَفْجِیْرًا ﴿91﴾	اَوْ
खजूरों से	और अंगूरों से	फिर तुम जारी करो	नहरें	दर्मियान उसके	ख़ूब जारी करना	या

تُسْقِطَ	السَّمَآءَ	كَمَا	زَعَمْتَ	عَلَیْنَا	كِسَفًا	اَوْ	تَاْتِیَ
तुम गिराओ	आसमान को	जैसा कि	तुम दावा करते हो	हम पर	टुकड़े-टुकड़े करके	या	तुम ले आओ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاللّٰهِ	وَالْمَلٰٓئِكَةِ	قَبِيْلًا ﴿92﴾	اَوْ	يَكُوْنَ	لَكَ	بَيْتٌ
अल्लाह को	और फ़रिश्तों को	सामने	या	हो	तुम्हारे लिए	घर

مِّنْ زُخْرُفٍ	اَوْ	تَرْقٰى	فِي السَّمَآءِ ؕ	وَلَنْ	نُّؤْمِنَ	لِرُقِيِّكَ
सोने का	या	तुम चढ़ जाओ	आसमान में	और हरगिज़ नहीं	हम मानेंगे	तुम्हारे चढ़ने को

حَتّٰى	تُنَزِّلَ	عَلَيْنَا	كِتٰبًا	نَّقْرَؤُهٗ ؕ	قُلْ	سُبْحَانَ	رَبِّيْ
हत्ता कि	तुम उतार लाओ	हम पर	एक किताब	हम पढ़ें उसे	कह दीजिए	पाक है	रब मेरा

هَلْ	كُنْتُ	اِلَّا	بَشَرًا	رَّسُوْلًا ﴿93﴾ ع	وَمَا	مَنَعَ	النَّاسَ	اَنْ
नहीं	हूं मैं	मगर	एक इंसान	जो रसूल है	और नहीं	रोका	लोगों को	कि

ع 9 10 10

يُّؤْمِنُوْٓا	اِذْ	جَآءَهُمُ	الْهُدٰٓى	اِلَّآ	اَنْ	قَالُوْٓا	اَبَعَثَ	اللّٰهُ
वो ईमान लाऐं	जब	आ गई उनके पास	हिदायत	मगर	ये कि	उन्होंने कहा	क्या भेजा	अल्लाह ने

بَشَرًا	رَّسُوْلًا ﴿94﴾	قُلْ	لَّوْ	كَانَ	فِي الْاَرْضِ	مَلٰٓئِكَةٌ	يَّمْشُوْنَ
एक इंसान को	रसूल बनाकर	कह दीजिए	अगर	होते	ज़मीन में	फ़रिश्ते	चलते-फिरते

مُطْمَئِنِّيْنَ	لَنَزَّلْنَا	عَلَيْهِمْ	مِّنَ السَّمَآءِ	مَلَكًا	رَّسُوْلًا ﴿95﴾	قُلْ
इत्मिनान के साथ	अलबत्ता नाज़िल करते हम	उन पर	आसमान से	एक फ़रिश्ता	रसूल	कह दीजिए

كَفٰى	بِاللّٰهِ	شَهِيْدًا	بَيْنِيْ	وَبَيْنَكُمْ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	بِعِبَادِهٖ
काफ़ी है	अल्लाह	गवाह	दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे	बेशक वो	है वो	अपने बंदो की

خَبِيْرًا	بَصِيْرًا ﴿96﴾	وَمَنْ	يَّهْدِ	اللّٰهُ	فَهُوَ	الْمُهْتَدِ ۚ	وَمَنْ
ख़ूब ख़बर रखने वाला	ख़ूब देखने वाला	और जिसे	हिदायत दे	अल्लाह	तो वो ही है	हिदायत याफ़्ता	और जिसे

يُّضْلِلْ	فَلَنْ	تَجِدَ	لَهُمْ	اَوْلِيَآءَ	مِنْ دُوْنِهٖ ؕ	وَنَحْشُرُهُمْ
वो भटका दे	तो हरगिज़ नहीं	आप पाऐंगे	उनके लिए	कोई मददगार	उसके सिवा	और हम इकट्ठा करेंगे उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	عَلٰى وُجُوْهِهِمْ	عُمْيًا	وَّبُكْمًا	وَّصُمًّا ؕ	مَاْوٰىهُمْ
दिन	क़यामत के	उनके चेहरों के बल	अंधा	और गूंगा	और बहरा (बनाकर)	ठिकाना उनका

النصف

جَهَنَّمُ ؕ	كُلَّمَا	خَبَتْ	زِدْنٰهُمْ	سَعِيْرًا ﴿97﴾	ذٰلِكَ	جَزَآؤُهُمْ
जहन्नम होगा	जब कभी	धीमी होने लगेगी	ज़्यादा कर देंगे हम उन पर	दहकती आग	ये	बदला है उनका

بِاَنَّهُمْ	كَفَرُوْا	بِاٰيٰتِنَا	وَقَالُوْٓا	ءَاِذَا	كُنَّا	عِظَامًا	وَّرُفَاتًا
बवजह उसके कि उन्होंने	इंकार किया	हमारी आयात का	और उन्होंने कहा	क्या जब	होंगे हम	हड्डियां	और चूरा-चूरा

ءَاِنَّا	لَمَبْعُوْثُوْنَ	خَلْقًا	جَدِيْدًا ﴿98﴾	اَوَلَمْ	يَرَوْا	اَنَّ	اللّٰهَ
क्या बेशक हम	अलबत्ता उठाए जाने वाले हैं	पैदा करके	नए सिरे से	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक	अल्लाह

الَّذِيْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	قَادِرٌ	عَلٰٓى	اَنْ	يَّخْلُقَ
वो जिसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	क़ादिर है	इस पर	कि	वो पैदा करे

مِثْلَهُمْ	وَجَعَلَ	لَهُمْ	اَجَلًا	لَّا رَيْبَ	فِيْهِ ؕ	فَاَبَى
मानिंद उनके	और उसने बना रखा है	उनके लिए	एक मुक़र्रर वक़्त	नहीं कोई शक	इसमें	पस इंकार किया

الظّٰلِمُوْنَ	اِلَّا	كُفُوْرًا ﴿99﴾	قُلْ	لَّوْ	اَنْتُمْ	تَمْلِكُوْنَ	خَزَآئِنَ
ज़ालिमों ने	सिवाए	कुफ़्र करने के	कह दीजिए	अगर	तुम	तुम मालिक होते	ख़ज़ानों के

رَحْمَةِ	رَبِّيْٓ	اِذًا	لَّاَمْسَكْتُمْ	خَشْيَةَ	الْاِنْفَاقِ ؕ	وَكَانَ
रहमत के	मेरे रब की	तब	अलबत्ता रोक लेते तुम	डर से	ख़र्च हो जाने के	और है

ع 11 7 11

الْاِنْسَانُ	قَتُوْرًا ﴿100﴾ ع	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	مُوْسٰى	تِسْعَ	اٰيٰتٍ	بَيِّنٰتٍ
इंसान	बहुत कंजूस/बख़ील	और अलबत्ता तहक़ीक़	दीं हमने	मूसा को	नौ	निशानियां	वाज़ेह

فَسْـَٔلْ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	اِذْ	جَآءَهُمْ	فَقَالَ	لَهٗ	فِرْعَوْنُ
तो पूछ लो	बनी इस्राईल से	जब	वो आया उनके पास	तो कहा	उसे	फ़िरऔन ने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنِّیْ	لَاَظُنُّكَ	یٰمُوْسٰی	مَسْحُوْرًا ﴿101﴾	قَالَ	لَقَدْ	عَلِمْتَ
बेशक मैं	अलबत्ता मैं गुमान करता हूं तुझे	ऐ मूसा	सहरज़दा	उसने कहा	अलबत्ता तहक़ीक़	जानते हो तुम

مَآ	اَنْزَلَ	هٰٓؤُلَآءِ	اِلَّا	رَبُّ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	بَصَآىِٕرَ ۚ
नहीं	उतारा	उन्हें	मगर	रब ने	आसमानों	और ज़मीन के	वाज़ेह निशानियां बना कर

وَاِنِّیْ	لَاَظُنُّكَ	یٰفِرْعَوْنُ	مَثْبُوْرًا ﴿102﴾	فَاَرَادَ	اَنْ	یَّسْتَفِزَّهُمْ
और बेशक मैं	अलबत्ता मैं गुमान करता हूं तुझे	ऐ फ़िरऔन	हलाक किया हुआ	तो उसने इरादा किया	कि	वो उखाड़ फेंके उन्हें

مِّنَ الْاَرْضِ	فَاَغْرَقْنٰهُ	وَمَنْ	مَّعَهٗ	جَمِیْعًا ﴿103﴾ لَا	وَّقُلْنَا
ज़मीन में	तो ग़र्क़ कर दिया हमने उसे	और जो	उसके साथ थे	सबके सबको	और कहा हमने

مِنْۢ بَعْدِهٖ	لِبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ	اسْكُنُوا	الْاَرْضَ	فَاِذَا	جَآءَ
बाद इसके	बनी इस्राईल को	रहो/बसो	ज़मीन में	फिर जब	आ जाएगा

وَعْدُ	الْاٰخِرَةِ	جِئْنَا	بِكُمْ	لَفِیْفًا ﴿104﴾ ؕ	وَبِالْحَقِّ	اَنْزَلْنٰهُ
वादा	आख़िरत का	ले आऐंगे हम	तुम्हें	इकट्ठा करके	और साथ हक़ के	नाज़िल किया हमने उसे

وَبِالْحَقِّ	نَزَلَ ؕ	وَمَآ	اَرْسَلْنٰكَ	اِلَّا	مُبَشِّرًا	وَّنَذِیْرًا ﴿105﴾
और साथ हक़ के ही	वो उतरा	और नहीं	भेजा हमने आपको	मगर	ख़ुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला बना कर

وقف لازم

وَقُرْاٰنًا	فَرَقْنٰهُ	لِتَقْرَاَهٗ	عَلَی النَّاسِ	عَلٰی مُكْثٍ	وَّنَزَّلْنٰهُ
और क़ुरआन को	अलग-अलग (नाज़िल) किया हमने उसे	ताकि आप पढ़ें उसे	लोगों पर	ठहर-ठहर कर	और नाज़िल किया हमने उसे

تَنْزِیْلًا ﴿106﴾	قُلْ	اٰمِنُوْا	بِهٖٓ	اَوْ	لَا تُؤْمِنُوْا ؕ	اِنَّ	الَّذِیْنَ
थोड़ा-थोड़ा नाज़िल करना	कह दीजिए	तुम ईमान लाओ	उस पर	या	ना तुम ईमान लाओ	बेशक	वो लोग जो

اُوْتُوا	الْعِلْمَ	مِنْ قَبْلِهٖٓ	اِذَا	یُتْلٰی	عَلَیْهِمْ	یَخِرُّوْنَ	لِلْاَذْقَانِ
दिए गए	इल्म	इससे पहले	जब	वो पढ़ा जाता है	उन पर	वो गिर पड़ते हैं	ठोड़ियों के बल

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سُجَّدًا ۩ (107) لا	وَّيَقُوْلُوْنَ	سُبْحٰنَ	رَبِّنَآ	اِنْ	كَانَ	وَعْدُ	رَبِّنَا
सज्दा करते हुए	और वो कहते हैं	पाक है	रब हमारा	बेशक	है	वादा	हमारे रब का

السجدة 4

لَمَفْعُوْلًا (108)	وَيَخِرُّوْنَ	لِلْاَذْقَانِ	يَبْكُوْنَ	وَيَزِيْدُهُمْ	خُشُوْعًا (109) السجدة
अलबत्ता हो कर रहने वाला	और वो गिर पड़ते हैं	ठोड़ियों के बल	रोते हुए	और वो बढ़ा देता है उन्हें	ख़ुशूअ में

قُلِ	ادْعُوا	اللّٰهَ	اَوِ	ادْعُوا	الرَّحْمٰنَ ط	اَيًّا مَّا	تَدْعُوْا
कह दीजिए	पुकारो	अल्लाह को	या	पुकारो	रहमान को	जिस (नाम) से भी	तुम पुकारोगे

فَلَهُ	الْاَسْمَآءُ	الْحُسْنٰى ج	وَلَا	تَجْهَرْ	بِصَلَاتِكَ	وَلَا
तो उसी के लिए हैं	नाम	अच्छे-अच्छे	और ना	आप आवाज़ बुलंद कीजिए	अपनी नमाज़ में	और ना

تُخَافِتْ	بِهَا	وَابْتَغِ	بَيْنَ	ذٰلِكَ	سَبِيْلًا (110)
आप पस्त कीजिए	उसे	और इख़्तियार कीजिए	दर्मियान	उसके	कोई रास्ता

وَقُلِ	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِیْ	لَمْ	يَتَّخِذْ	وَلَدًا
और कह दीजिए	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	वो जिसने	नहीं	बनाई	कोई औलाद

وَّلَمْ	يَكُنْ	لَّهٗ	شَرِيْكٌ	فِى الْمُلْكِ	وَلَمْ	يَكُنْ
और नहीं	है	उसके लिए	कोई शरीक	बादशाहत में	और नहीं	है

ع 12 11 12

لَّهٗ	وَلِیٌّ	مِّنَ الذُّلِّ	وَكَبِّرْهُ	تَكْبِيْرًا (111) ع
उसके लिए	कोई मददगार	कमज़ोरी (की वजह) से	और बड़ाई बयान कीजिए उसकी	ख़ूब बड़ाई बयान करना

اٰيَاتُهَا: 110 — 18 سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ 69 — رُكُوْعَاتُهَا: 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِیْۤ	اَنْزَلَ	عَلٰى عَبْدِهِ	الْكِتٰبَ	وَلَمْ	يَجْعَلْ
सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	वो जिसने	नाज़िल किया	अपने बंदे पर	किताब को	और नहीं	उसने रखा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ لَّدُنْهُ	شَدِيْدًا	بَاْسًا	لِّيُنْذِرَ	قَيِّمًا	عِوَجًا ⑴ سکتة	لَّهٗ
उसकी तरफ़ से	सख़्त से	अज़ाब	ताकि वो डराए	बिल्कुल सीधी	कोई टेढ़ापन	उसमें

لَهُمْ	اَنَّ	الصّٰلِحٰتِ	يَعْمَلُوْنَ	الَّذِيْنَ	الْمُؤْمِنِيْنَ	وَيُبَشِّرَ
उनके लिए	कि बेशक	नेक	अमल करते हैं	वो जो	मोमिनों को	और वो ख़ुशख़बरी दे

الَّذِيْنَ	وَّيُنْذِرَ	اَبَدًا ⑶ ۙ	فِيْهِ	مّٰكِثِيْنَ	حَسَنًا ⑵ ۙ	اَجْرًا
उनको जिन्होंने	और वो डराए	हमेशा-हमेशा	उसमें	रहने वाले हैं	अच्छा	अज्र है

وَّلَا	مِنْ عِلْمٍ	بِهٖ	لَهُمْ	مَا	وَلَدًا ⑷ ق	اللّٰهُ	اتَّخَذَ	قَالُوا
और ना	कोई इल्म	उसका	उन्हें	नहीं	कोई औलाद	अल्लाह ने	बना ली	कहा

يَّقُوْلُوْنَ	اِنْ	مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ	تَخْرُجُ	كَلِمَةً	كَبُرَتْ	لِاٰبَآىِٕهِمْ ۭ
वो कहते	नहीं	उनके मुंहों से	जो निकलती है	बात	बहुत बड़ी है	उनके आबा ओ अजदाद को

اِنْ	عَلٰٓي اٰثَارِهِمْ	نَّفْسَكَ	بَاخِعٌ	فَلَعَلَّكَ	كَذِبًا ⑸	اِلَّا
अगर	उनके पीछे	अपनी जान को	हलाक करने वाले हैं	पस शायद कि आप	झूठ	मगर

مَا	جَعَلْنَا	اِنَّا	اَسَفًا ⑹	الْحَدِيْثِ	بِهٰذَا	يُؤْمِنُوْا	لَّمْ
उसको जो	बनाया हमने	बेशक हम	ग़म के मारे	कलाम के	साथ इस	वो ईमान लाएं	ना

عَمَلًا ⑺	اَحْسَنُ	اَيُّهُمْ	لِنَبْلُوَهُمْ	لَّهَا	زِيْنَةً	عَلَى الْاَرْضِ
अमल में	ज़्यादा अच्छा है	कौन सा उनमें से	ताकि हम आज़माएं उन्हें	उसके लिए	ज़ीनत/आराइश	ज़मीन पर है

حَسِبْتَ	اَمْ	جُرُزًا ⑻ ۭ	صَعِيْدًا	عَلَيْهَا	مَا	لَجٰعِلُوْنَ	وَاِنَّا
समझा आपने	क्या	चटियल	मैदान	उस पर है	उसको जो	अलबत्ता बनाने वाले हैं	और बेशक हम

اِذْ	عَجَبًا ⑼	مِنْ اٰيٰتِنَا	كَانُوْا	وَالرَّقِيْمِ ۙ	اَصْحٰبَ الْكَهْفِ	اَنَّ
जब	अजीब	हमारी निशानियों में से	थे वो	और कतबे वाले	ग़ार वाले	कि बेशक

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَوَى	الْفِتْيَةُ	إِلَى	الْكَهْفِ	فَقَالُوا	رَبَّنَآ	اٰتِنَا	مِن لَّدُنكَ
पनाह ली	उन नौजवानों ने	तरफ़	ग़ार के	फिर वो कहने लगे	ऐ हमारे रब	दे हमें	अपने पास से

رَحْمَةً	وَّهَيِّئْ	لَنَا	مِنْ أَمْرِنَا	رَشَدًا (10)	فَضَرَبْنَا
रहमत	और मुहैया कर	हमारे लिए	हमारे मामले में	रहनुमाई/भलाई	तो डाल दिया हमने (पर्दा)

عَلَىٰٓ اٰذَانِهِمْ	فِي الْكَهْفِ	سِنِينَ	عَدَدًا (11) لا	ثُمَّ	بَعَثْنٰهُمْ	لِنَعْلَمَ
उनके कानों पर	ग़ार में	कई साल	गिनती के	फिर	उठाया हमने उन्हें	ताकि हम जान लें

ع 1 12 13

أَيُّ	الْحِزْبَيْنِ	أَحْصٰى	لِمَا	لَبِثُوٓا	أَمَدًا (12) ع	نَحْنُ
कौन सा	दो गिरोहों में से	ख़ूब गिनने वाला है	उसको जो	वो ठहरे रहे	मुद्दत	हम

نَقُصُّ	عَلَيْكَ	نَبَاَهُمْ	بِالْحَقِّ ط	إِنَّهُمْ	فِتْيَةٌ	اٰمَنُوا	بِرَبِّهِمْ
हम बयान करते हैं	आप पर	ख़बर उनकी	साथ हक़ के	बेशक वो	चंद नौजवान थे	जो ईमान लाए	अपने रब पर

وَزِدْنٰهُمْ	هُدًى (13) قلے	وَّرَبَطْنَا	عَلٰى قُلُوبِهِمْ	إِذْ	قَامُوا
और ज़्यादा कर दिया हमने उन्हें	हिदायत में	और मज़बूत कर दिया हमने	उनके दिलों को	जब	वो खड़े हुए

فَقَالُوا	رَبُّنَا	رَبُّ	السَّمٰوٰتِ	وَالْأَرْضِ	لَن	نَّدْعُوَا	مِن دُونِهٖٓ
फिर कहने लगे	रब हमारा	रब है	आसमानों	और ज़मीन का	हरगिज़ नहीं	हम पुकारेंगे	उसके सिवा

إِلٰهًا	لَّقَدْ	قُلْنَآ	إِذًا	شَطَطًا (14)	هٰٓؤُلَآءِ	قَوْمُنَا	اتَّخَذُوا
(किसी को) इलाह	अलबत्ता तहक़ीक़	कही हमने	तब	बात नाइंसाफ़ी की	ये है	क़ौम हमारी	उन्होंने बना लिए

مِن دُونِهٖٓ	اٰلِهَةً ط	لَوْلَا	يَأْتُونَ	عَلَيْهِم	بِسُلْطٰنٍ	بَيِّنٍ ط	فَمَنْ
उसके सिवा	कई इलाह	क्यों नहीं	वो लाए	उन पर	कोई दलील	वाज़ेह	तो कौन

أَظْلَمُ	مِمَّنِ	افْتَرٰى	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا (15) ط	وَإِذِ	اعْتَزَلْتُمُوهُمْ	وَمَا
बड़ा ज़ालिम है	उससे जो	गढ़ ले	अल्लाह पर	झूठ	और जब	अलग हो गए तुम उनसे	और जिनकी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَعْبُدُوْنَ	اِلَّا	اللّٰهَ	فَاْوٗٓا	اِلَى	الْكَهْفِ	يَنْشُرْ	لَكُمْ	رَبُّكُمْ
वो इबादत कर रहे हैं	सिवाए	अल्लाह के	तो पनाह लो	तरफ़	ग़ार के	वो फैला देगा	तुम्हारे लिए	रब तुम्हारा

مِّنْ رَّحْمَتِهٖ	وَيُهَيِّئْ	لَكُمْ	مِّنْ اَمْرِكُمْ	مِّرْفَقًا ⑯	وَتَرَى
अपनी रहमत में से	और वो मुहैया करेगा	तुम्हारे लिए	तुम्हारे मामले में	सहूलत/आसानी	और आप देखते

الشَّمْسَ	اِذَا	طَلَعَتْ	تَّزٰوَرُ	عَنْ كَهْفِهِمْ	ذَاتَ الْيَمِيْنِ	وَاِذَا
सूरज को	जब	वो तुलू होता	वो किनारा कर जाता	उनके ग़ार से	दाऐं जानिब	और जब

غَرَبَتْ	تَّقْرِضُهُمْ	ذَاتَ الشِّمَالِ	وَهُمْ	فِيْ فَجْوَةٍ	مِّنْهُ ؕ	ذٰلِكَ
वो ग़ुरूब होता	वो कतरा जाता उनसे	बाऐं जानिब	और वो	एक खुली जगह में थे	उस (ग़ार) की	ये

مِنْ اٰيٰتِ	اللّٰهِ ؕ	مَنْ	يَّهْدِ	اللّٰهُ	فَهُوَ	الْمُهْتَدِ ۚ	وَمَنْ
निशानियों में से है	अल्लाह की	जिसे	हिदायत दे	अल्लाह	तो वो ही	हिदायत पाने वाला है	और जिसे

يُّضْلِلْ	فَلَنْ	تَجِدَ	لَهٗ	وَلِيًّا	مُّرْشِدًا ع ⑰	وَتَحْسَبُهُمْ
वो भटका दे	तो हरगिज़ नहीं	आप पाऐंगे	उसके लिए	कोई दोस्त	रहनुमाई करने वाला	और आप समझते उन्हें

ع 2 5 14

اَيْقَاظًا	وَّهُمْ	رُقُوْدٌ ۛ	وَّنُقَلِّبُهُمْ	ذَاتَ الْيَمِيْنِ
कि वो जाग रहे हैं	हालांकि वो	सोए हुए थे	और हम करवटें बदलते रहते उनकी	दाऐं जानिब

وَذَاتَ الشِّمَالِ ۛ	وَكَلْبُهُمْ	بَاسِطٌ	ذِرَاعَيْهِ	بِالْوَصِيْدِ ؕ	لَوِ
और बाऐं जानिब	और कुत्ता उनका	फैलाए हुए था	अपने दोनों हाथ	दहाने पर	अगर

اطَّلَعْتَ	عَلَيْهِمْ	لَوَلَّيْتَ	مِنْهُمْ	فِرَارًا	وَّلَمُلِئْتَ	مِنْهُمْ
झांकते आप	उन पर	अलबत्ता पीठ फेर लेते आप	उनसे	भागते हुए	और अलबत्ता भर दिए जाते आप	उनसे

رُعْبًا ⑱	وَكَذٰلِكَ	بَعَثْنٰهُمْ	لِيَتَسَآءَلُوْا	بَيْنَهُمْ ؕ	قَالَ
रौब में	और इसी तरह	उठाया हमने उन्हें	ताकि वो एक दूसरे से सवाल करें	आपस में	कहा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَآئِلٌ	مِّنْهُمْ	كَمْ	لَبِثْتُمْ ؕ	قَالُوْا	لَبِثْنَا	يَوْمًا	اَوْ	بَعْضَ
कहने वाले ने	उनमें से	कितना	ठहरे तुम	उन्होंने कहा	ठहरे हम	एक दिन	या	कुछ हिस्सा

يَوْمٍ ؕ	قَالُوْا	رَبُّكُمْ	اَعْلَمُ	بِمَا	لَبِثْتُمْ ؕ	فَابْعَثُوْٓا	اَحَدَكُمْ
दिन का	वो कहने लगे	रब तुम्हारा	ज़्यादा जानता है	उसे जो	ठहरे तुम	पस भेजो	अपने में से किसी एक को

بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ	اِلَى الْمَدِيْنَةِ	فَلْيَنْظُرْ	اَيُّهَآ	اَزْكٰى	طَعَامًا
साथ अपनी इस चांदी के	तरफ़ शहर के	फिर चाहिए कि वो देखे	कौन सा उनमें से	ज़्यादा पाकीज़ा	खाना है

فَلْيَاْتِكُمْ	بِرِزْقٍ	مِّنْهُ	وَلْيَتَلَطَّفْ	وَلَا	يُشْعِرَنَّ
पस चाहिए कि वो लाए तुम्हारे पास	खाना	उससे	और चाहिए कि वो नर्मी करे	और ना	वो हरगिज़ ख़बर दे

بِكُمْ	اَحَدًا ﴿19﴾	اِنَّهُمْ	اِنْ	يَّظْهَرُوْا	عَلَيْكُمْ	يَرْجُمُوْكُمْ	اَوْ
तुम्हारे बारे में	किसी एक को	बेशक वो	अगर	वो मुत्तलअ हो गए	तुम पर	वो संगसार कर देंगे तुम्हें	या

يُعِيْدُوْكُمْ	فِيْ مِلَّتِهِمْ	وَلَنْ	تُفْلِحُوْٓا	اِذًا	اَبَدًا ﴿20﴾	وَكَذٰلِكَ
वो लौटा ले जाऐंगे तुम्हें	अपनी मिल्लत में	और हरगिज़ नहीं	तुम फ़लाह पाओगे	तब	कभी भी	और इसी तरह

اَعْثَرْنَا	عَلَيْهِمْ	لِيَعْلَمُوْٓا	اَنَّ	وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقٌّ	وَّاَنَّ
आगाह कर दिया हमने	उन पर (लोगों को)	ताकि वो जान लें	कि बेशक	वादा	अल्लाह का	सच्चा है	और बेशक

السَّاعَةَ	لَا رَيْبَ	فِيْهَا ۚ	اِذْ	يَتَنَازَعُوْنَ	بَيْنَهُمْ	اَمْرَهُمْ	
क़यामत	नहीं कोई शक	उसमें	जब	वो झगड़ रहे थे	आपस में	उनके मामले में	

فَقَالُوا	ابْنُوْا	عَلَيْهِمْ	بُنْيَانًا ؕ	رَبُّهُمْ	اَعْلَمُ	بِهِمْ ؕ	قَالَ
तो उन्होंने कहा	बनाओ	उन पर	एक इमारत	रब उनका	ज़्यादा जानता है	उन्हें	कहा

الَّذِيْنَ	غَلَبُوْا	عَلٰٓى اَمْرِهِمْ	لَنَتَّخِذَنَّ	عَلَيْهِمْ	مَّسْجِدًا ﴿21﴾
उन लोगों ने जो	ग़ालिब थे	उनके मामले में	अलबत्ता हम ज़रूर बनाऐंगे	उन पर	एक सज्दा गाह

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بأن التاء بعد الياء
من النصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير 12

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَادِسُهُمْ	خَمْسَةٌ	وَيَقُوْلُوْنَ	كَلْبُهُمْ ج	رَّابِعُهُمْ	ثَلٰثَةٌ	سَيَقُوْلُوْنَ
छठा उनका	पांच थे	और वो कहेंगे	कुत्ता था उनका	चौथा उनका	तीन थे	अनक़रीब वो कहेंगे

وَّثَامِنُهُمْ	سَبْعَةٌ	وَيَقُوْلُوْنَ	بِالْغَيْبِ ج	رَجْمًا	كَلْبُهُمْ
और आठवां उनका	सात थे	और वो कहेंगे	बिन देखे	(बात) फेंकते हुए	कुत्ता था उनका

اِلَّا	يَعْلَمُهُمْ	مَّا	بِعِدَّتِهِمْ	اَعْلَمُ	رَّبِّيْٓ	قُلْ	كَلْبُهُمْ ط
मगर	जानते उन्हें	नहीं	तादाद उनकी	ज़्यादा जानता है	मेरा रब	कह दीजिए	कुत्ता था उनका

وَّلَا	ظَاهِرًا ص	مِرَآءً	اِلَّا	فِيْهِمْ	تُمَارِ	فَلَا	قَلِيْلٌ قف ۵
और ना	सरसरी	झगड़ना	मगर	उनके बारे में	आप झगड़ा कीजिए	तो ना	थोड़े

اِنِّيْ	لِشَايْءٍ	تَقُوْلَنَّ	وَلَا	اَحَدًا (22)	مِّنْهُمْ	فِيْهِمْ	تَسْتَفْتِ	ع 3 5 15
कि बेशक मैं	किसी चीज़ के लिए	हरगिज़ आप कहिए	और ना	किसी एक से	उनमें से	उनके बारे में	आप पूछिए	

رَّبَّكَ	وَاذْكُرْ	اللّٰهُ ز	يَّشَآءَ	اَنْ	اِلَّآ	غَدًا (23) لا	ذٰلِكَ	فَاعِلٌ
अपने रब को	और याद कीजिए	अल्लाह	चाहे	ये कि	मगर	कल	ये	करने वाला हूं

لِاَقْرَبَ	رَبِّيْ	يَّهْدِيَنِ	اَنْ	عَسٰٓى	وَقُلْ	نَسِيْتَ	اِذَا
क़रीबतर की	मेरा रब	रहनुमाई करेगा मेरी	कि	उम्मीद है	और कह दीजिए	भूल जाएं आप	जब

سِنِيْنَ	مِائَةٍ	ثَلٰثَ	فِيْ كَهْفِهِمْ	وَلَبِثُوْا	رَشَدًا (24)	مِنْ هٰذَا
साल	सौ	तीन	अपने ग़ार में	और वो ठहरे	भलाई में	इससे

لَهٗ	لَبِثُوْا ج	بِمَا	اَعْلَمُ	اللّٰهُ	قُلِ	تِسْعًا (25)	وَازْدَادُوْا
उसी के लिए है	वो ठहरे	उसे जो	ज़्यादा जानता है	अल्लाह	कह दीजिए	नौ (साल)	और उन्होंने ज़्यादा कर दिए

لَهُمْ	مَا	وَاَسْمِعْ ط	اَبْصِرْ بِهٖ	وَالْاَرْضِ ط	السَّمٰوٰتِ	غَيْبُ
उनके लिए	नहीं	और क्या ख़ूब सुनने वाला है	क्या ख़ूब देखने वाला है वो	और ज़मीन का	आसमानों	ग़ैब

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاتْلُ	اَحَدًا ﴿26﴾	فِيْ حُكْمِهٖٓ	يُشْرِكُ	وَّلَا	مِّنْ وَّلِيٍّ ز	مِّنْ دُوْنِهٖ
और पढ़िए	किसी एक को	अपने हुक्म में	वो शरीक करता	और नहीं	कोई दोस्त	उसके सिवा

لِكَلِمٰتِهٖ ۗ	مُبَدِّلَ	لَا	رَبِّكَ ؕ	مِنْ كِتَابِ	اِلَيْكَ	اُوْحِيَ	مَآ
उसके कलिमात को	कोई बदलने वाला	नहीं	आपके रब की	किताब से	तरफ़ आपके	वही किया गया है	जो

مَعَ	نَفْسَكَ	وَاصْبِرْ	مُلْتَحَدًا ﴿27﴾	مِنْ دُوْنِهٖ	تَجِدَ	وَلَنْ
साथ	अपने नफ़्स को	और रोक रखिए	कोई पनाह गाह	उसके सिवा	आप पाएंगे	और हरगिज़ नहीं

وَجْهَهٗ	يُرِيْدُوْنَ	وَالْعَشِيِّ	بِالْغَدٰوةِ	رَبَّهُمْ	يَدْعُوْنَ	الَّذِيْنَ
चेहरा उसका	वो चाहते हैं	और शाम	सुबह	अपने रब को	पुकारते हैं	उन लोगों के जो

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ	زِيْنَةَ	تُرِيْدُ	عَنْهُمْ ۚ	عَيْنٰكَ	تَعْدُ	وَلَا
दुनिया की ज़िंदगी की	ज़ीनत	आप चाहते हैं	उनसे	अपनी दोनों आंखों को	आप फेरिए	और ना

وَاتَّبَعَ	عَنْ ذِكْرِنَا	قَلْبَهٗ	اَغْفَلْنَا	مَنْ	تُطِعْ	وَلَا
और उसने पैरवी की	अपने ज़िक्र से	दिल उसका	ग़ाफ़िल कर दिया हमने	उसकी जो	आप इताअत कीजिए	और ना

فَمَنْ	مِنْ رَّبِّكُمْ ۗ	الْحَقُّ	وَقُلِ	فُرُطًا ﴿28﴾	اَمْرُهٗ	وَكَانَ	هَوٰىهُ
तो जो	तुम्हारे रब की तरफ़ से है	हक़	और कह दीजिए	हद से बढ़ा हुआ	मामला उसका	और है	अपनी ख़्वाहिश की

اَعْتَدْنَا	اِنَّآ	فَلْيَكْفُرْ ۙ	شَآءَ	وَّمَنْ	فَلْيُؤْمِنْ	شَآءَ
तैयार कर रखी है हमने	बेशक हम	पस वो कुफ़्र करे	चाहे	और जो	पस वो ईमान ले आए	चाहे

يَّسْتَغِيْثُوْا	وَاِنْ	سُرَادِقُهَا ؕ	بِهِمْ	اَحَاطَ	نَارًا ۙ	لِلظّٰلِمِيْنَ
वो फ़रियाद करेंगे	और अगर	क़नातें (लपटें) उसकी	उन्हें	घेर लेंगी	ऐसी आग	ज़ालिमों के लिए

الشَّرَابُ ؕ	بِئْسَ	الْوُجُوْهَ ؕ	يَشْوِي	كَالْمُهْلِ	بِمَآءٍ	يُغَاثُوْا
पीने की चीज़	कितनी बुरी है	चेहरों को	जो भून डालेगा	मानिंद तेल की तिलछट के	साथ पानी के	फ़रियादरसी किए जाएंगे

الثلثة

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَسَاءَتْ	مُرْتَفَقًا (29)	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ
और कितनी बुरी है	आरामगाह	बेशक	वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

اِنَّا	لَا نُضِيْعُ	اَجْرَ	مَنْ	اَحْسَنَ	عَمَلًا (30) ج	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ
बेशक हम	नहीं हम ज़ाया करते	अजर	उसका जो	अच्छा करे	अमल	यही लोग हैं	उनके लिए

جَنّٰتُ	عَدْنٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهِمُ	الْاَنْهٰرُ	يُحَلَّوْنَ	فِيْهَا
बाग़ात हैं	हमेशगी के	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	वो पहनाए जाऐंगे	उनमें

مِنْ اَسَاوِرَ	مِنْ ذَهَبٍ	وَّيَلْبَسُوْنَ	ثِيَابًا	خُضْرًا	مِّنْ سُنْدُسٍ
कंगन	सोने के	और वो पहनेंगे	लिबास	सब्ज़	बारीक रेशम के

وَّاِسْتَبْرَقٍ	مُّتَّكِـِٕيْنَ	فِيْهَا	عَلَى الْاَرَآئِكِ ط	نِعْمَ	الثَّوَابُ ط
और मोटे रेशम के	तकिया लगाए होंगे	उनमें	तख़्तों पर	कितना अच्छा है	बदला

وَحَسُنَتْ	مُرْتَفَقًا (31) ع	وَاضْرِبْ	لَهُمْ	مَّثَلًا	رَّجُلَيْنِ	جَعَلْنَا
और कितनी अच्छी है	आरामगाह	और बयान कीजिए	उनके लिए	मिसाल	दो आदमियों की	बनाए हमने

ع 4 9 16

لِاَحَدِهِمَا	جَنَّتَيْنِ	مِنْ اَعْنَابٍ	وَّحَفَفْنٰهُمَا	بِنَخْلٍ
उन दोनों में से एक के	दो बाग़	अंगूरों के	और घेर लिया हमने उन दोनों को	खजूर के दरख़्तों से

وَّجَعَلْنَا	بَيْنَهُمَا	زَرْعًا (32) ط	كِلْتَا	الْجَنَّتَيْنِ	اٰتَتْ	اُكُلَهَا
और बनाए हमने	दर्मियान उन दोनों के	खेत	दोनों	बाग़ों ने	दिया	फल अपना

وَلَمْ	تَظْلِمْ	مِّنْهُ	شَيْـًٔا لا	وَّفَجَّرْنَا	خِلٰلَهُمَا	نَهَرًا (33) لا	وَّكَانَ
और ना	कमी की	उसमें	कुछ भी	और जारी कर दी हमने	उन दोनों के बीच	एक नहर	और हुआ

لَهٗ	ثَمَرٌ ج	فَقَالَ	لِصَاحِبِهٖ	وَهُوَ	يُحَاوِرُهٗٓ	اَنَا	اَكْثَرُ
उसके लिए	फल	तो उसने कहा	अपने साथी से	जब कि वो	वो उससे बात चीत कर रहा था	मैं	ज़्यादा हूं

© AL-NIDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنكَ	مَالًا	وَّ اَعَزُّ	نَفَرًا (34)	وَدَخَلَ	جَنَّتَهٗ	وَهُوَ	ظَالِمٌ
तुझ से	माल में	और ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूं	जत्थे में	और वो दाख़िल हुआ	अपने बाग़ में	इस हाल में कि वो	ज़ुल्म करने वाला था

لِّنَفْسِهٖ ج	قَالَ	مَآ	اَظُنُّ	اَنْ	تَبِيْدَ	هٰذِهٖٓ	اَبَدًا (35) لا	وَّمَآ
अपनी जान पर	कहने लगा	नहीं	मैं गुमान करता	कि	बरबाद होगा	ये (बाग़)	कभी भी	और नहीं

اَظُنُّ	السَّاعَةَ	قَآئِمَةً لا	وَّلَئِنْ	رُّدِدْتُّ	اِلٰى رَبِّىْ	لَاَجِدَنَّ
मैं गुमान करता कि	क़यामत	क़ायम होने वाली है	और अलबत्ता अगर	मैं लौटाया गया	तरफ़ अपने रब के	अलबत्ता मैं ज़रूर पाऊंगा

خَيْرًا	مِّنْهَا	مُنْقَلَبًا (36)	قَالَ	لَهٗ	صَاحِبُهٗ	وَهُوَ	يُحَاوِرُهٗٓ
बेहतर	उस से	लौटने की जगह/अंजाम	कहा	उसे	उसके साथी ने	जबकि वो	वो उससे बात चीत कर रहा था

اَكَفَرْتَ	بِالَّذِىْ	خَلَقَكَ	مِنْ تُرَابٍ	ثُمَّ	مِنْ نُّطْفَةٍ	ثُمَّ
क्या इंकार करता है तू	उसका जिसने	पैदा किया तुझे	मिट्टी से	फिर	नुत्फ़े से	फिर

سَوّٰىكَ	رَجُلًا (37) ط	لٰكِنَّا۠	هُوَ	اللّٰهُ	رَبِّىْ	وَلَآ	اُشْرِكُ	بِرَبِّىْٓ
दुरुस्त बनाया तुझे	एक मर्द	लेकिन	वो	अल्लाह	मेरा रब है	और नहीं	मैं शरीक ठहराता	साथ अपने रब के

اَحَدًا (38)	وَلَوْلَآ	اِذْ	دَخَلْتَ	جَنَّتَكَ	قُلْتَ	مَا	شَآءَ	اللّٰهُ لا
किसी एक को	और क्यों ना	जब	दाख़िल हुआ तू	अपने बाग़ में	कहा तूने	जो	चाहा	अल्लाह ने

لَا قُوَّةَ	اِلَّا	بِاللّٰهِ ج	اِنْ	تَرَنِ	اَنَا	اَقَلَّ	مِنْكَ	مَالًا
नहीं कोई क़ुव्वत	मगर	अल्लाह की (तौफ़ीक़) से	अगर	तू देखता है मुझे	कि मैं	कमतर हूं	तुझसे	माल में

وَّوَلَدًا (39) ج	فَعَسٰى	رَبِّىْٓ	اَنْ	يُّؤْتِيَنِ	خَيْرًا	مِّنْ جَنَّتِكَ
और औलाद में	तो उम्मीद है	मेरा रब	कि	वो दे दे मुझे	बेहतर	तेरे बाग़ से

وَيُرْسِلَ	عَلَيْهَا	حُسْبَانًا	مِّنَ السَّمَآءِ	فَتُصْبِحَ	صَعِيْدًا	زَلَقًا (40) لا
और वो भेजे	उस पर	कोई अज़ाब	आसमान से	तो वो हो जाए	मैदान	साफ़/चटियल

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَوْ	يُصْبِحَ	مَآؤُهَا	غَوْرًا	فَلَنْ	تَسْتَطِيْعَ	لَهٗ	طَلَبًا ﴿41﴾
या	हो जाए	पानी उसका	गहरा	तो हरगिज़ नहीं	तुम इस्तिताअत रखोगे	उसे	तलाश करने की

وَاُحِيْطَ	بِثَمَرِهٖ	فَاَصْبَحَ	يُقَلِّبُ	كَفَّيْهِ	عَلٰى	مَآ
और घेर लिया गया	फल उसका	तो उसने सुबह की	वो मलता था	अपनी दोनों हथेलियां	उस पर	जो

اَنْفَقَ	فِيْهَا	وَهِيَ	خَاوِيَةٌ	عَلٰى عُرُوْشِهَا	وَيَقُوْلُ	يٰلَيْتَنِيْ
उसने ख़र्च किया	उसमें	और वो (बाग़)	गिरा पड़ा था	अपनी छतों पर	और वो कह रहा था	ऐ काश कि मैं

لَمْ	اُشْرِكْ	بِرَبِّيْٓ	اَحَدًا ﴿42﴾	وَلَمْ	تَكُنْ	لَّهٗ	فِئَةٌ
ना	मैं शरीक करता	साथ अपने रब के	किसी एक को	और ना	थे	उसके लिए	जमाअत (के लोग)

يَّنْصُرُوْنَهٗ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَمَا	كَانَ	مُنْتَصِرًا ﴿43﴾ ط	هُنَالِكَ
जो मदद करते उसकी	सिवाए	अल्लाह के	और ना	था वो	बदला लेने वाला	वहां

اَلْوَلَايَةُ	لِلّٰهِ	الْحَقِّ ط	هُوَ	خَيْرٌ	ثَوَابًا	وَّخَيْرٌ	عُقْبًا ﴿44﴾ ع
सारा इख़्तियार	अल्लाह ही के लिए है	जो सच्चा है	वो	बेहतर है	बदला (देने में)	और बेहतर है	अंजाम के ऐतबार से

ع 5 13 17

وَاضْرِبْ	لَهُمْ	مَّثَلَ	الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا	كَمَآءٍ	اَنْزَلْنٰهُ	مِنَ السَّمَآءِ
और बयान कीजिए	उनके लिए	मिसाल	दुनिया की ज़िंदगी की	जैसे पानी	उतारा हमने उसे	आसमान से

فَاخْتَلَطَ	بِهٖ	نَبَاتُ	الْاَرْضِ	فَاَصْبَحَ	هَشِيْمًا	تَذْرُوْهُ	الرِّيٰحُ ط
तो मिल जुल गईं	साथ उसके	नबातात	ज़मीन की	तो वो हो गईं	चूरा-चूरा	बिखेरती हैं उसे	हवाएं

وَكَانَ	اللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	مُّقْتَدِرًا ﴿45﴾	اَلْمَالُ	وَالْبَنُوْنَ
और है	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	क़ुदरत रखने वाला है	माल	और बेटे

زِيْنَةُ	الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج	وَالْبٰقِيٰتُ	الصّٰلِحٰتُ	خَيْرٌ	عِنْدَ رَبِّكَ
ज़ीनत हैं	दुनिया की ज़िंदगी की	और बाक़ी रहने वाली	नेकियां	बेहतर हैं	आपके रब के नज़दीक़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ثَوَابًا	وَّخَيْرٌ	اَمَلًا ﴿46﴾	وَيَوْمَ	نُسَيِّرُ	الْجِبَالَ	وَتَرَى
सवाब के ऐतबार से	और बेहतर हैं	उम्मीद के ऐतबार से	और जिस दिन	हम चलाऐंगे	पहाड़ों को	और आप देखेंगे

الْاَرْضَ	بَارِزَةً ۙ	وَّحَشَرْنٰهُمْ	فَلَمْ	نُغَادِرْ	مِنْهُمْ	اَحَدًا ﴿47﴾ ۚ
ज़मीन को	खुली हुई/अयां	और इकट्ठा कर लेंगे हम उन्हें	फिर नहीं	हम छोड़ेंगे	उनमें से	किसी एक को

وَعُرِضُوْا	عَلٰى رَبِّكَ	صَفًّا ؕ	لَقَدْ	جِئْتُمُوْنَا	كَمَا	خَلَقْنٰكُمْ
और वो पेश किए जाऐंगे	आपके रब पर	सफ़ दर सफ़	अलबत्ता तहक़ीक़	आ गए तुम हमारे पास	जैसा कि	पैदा किया था हमने तुम्हें

اَوَّلَ	مَرَّةٍ ۭ	بَلْ	زَعَمْتُمْ	اَلَّنْ	نَّجْعَلَ	لَكُمْ
पहली	बार/मर्तबा	बल्कि	गुमान किया तुमने	कि हरगिज़ नहीं	हम बनाऐंगे	तुम्हारे लिए

وَوُضِعَ	الْكِتٰبُ	فَتَرَى	الْمُجْرِمِيْنَ	مُشْفِقِيْنَ	مِمَّا	فِيْهِ
और रख दी जाएगी	किताब	पस आप देखेंगे	मुजरिमों को	डर रहे होंगे	उससे जो	उसमें (होगा)

وَيَقُوْلُوْنَ	يٰوَيْلَتَنَا	مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ	لَا يُغَادِرُ	صَغِيْرَةً
और वो कहेंगे	हाय अफ़सोस हम पर	क्या है इस किताब को	नहीं छोड़ा	किसी छोटी (चीज़) को

وَّلَا	كَبِيْرَةً	اِلَّآ	اَحْصٰىهَا ۚ	وَوَجَدُوْا	مَا	عَمِلُوْا
और ना	बड़ी (चीज़) को	मगर	उसने शुमार कर रखा है उसे	और वो पा लेंगे	जो	उन्होंने अमल किए

ع 6 5 18

حَاضِرًا ؕ	وَلَا	يَظْلِمُ	رَبُّكَ	اَحَدًا ﴿49﴾ ع	وَاِذْ	قُلْنَا	لِلْمَلٰٓئِكَةِ
हाज़िर	और ना	ज़ुल्म करेगा	रब आपका	किसी एक पर	और जब	कहा हमने	फ़रिश्तों से

اسْجُدُوْا	لِاٰدَمَ	فَسَجَدُوْٓا	اِلَّآ	اِبْلِيْسَ ؕ	كَانَ	مِنَ الْجِنِّ
सज्दा करो	आदम को	तो उन्होंने सज्दा किया	सिवाए	इब्लीस के	था वो	जिन्नों में से

فَفَسَقَ	عَنْ اَمْرِ	رَبِّهٖ ؕ	اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ	وَذُرِّيَّتَهٗٓ	اَوْلِيَآءَ
तो उसने नाफ़रमानी की	हुक्म की	अपने रब के	क्या फिर तुम बनाते हो उसे	और उसकी औलाद को	दोस्त

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ دُونِي	وَهُمْ	لَكُمْ	عَدُوٌّ ۚ	بِئْسَ	لِلظّٰلِمِيْنَ	بَدَلًا (50)
मेरे सिवा	हालांकि वो	तुम्हारे लिए	दुश्मन हैं	कितना बुरा है	ज़ालिमों के लिए	बतौर बदल

مَآ	اَشْهَدْتُّهُمْ	خَلْقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَلَا	خَلْقَ
नहीं	मैंने हाज़िर किया था उन्हें	पैदाइश (के वक़्त)	आसमानों	और ज़मीन की	और ना	पैदाइश में

اَنْفُسِهِمْ ۖ	وَمَا	كُنْتُ	مُتَّخِذَ	الْمُضِلِّيْنَ	عَضُدًا (51)	وَيَوْمَ
उनकी अपनी	और नहीं	हूं मैं	बनाने वाला	गुमराह करने वालों को	बाज़ू (मददगार)	और जिस दिन

يَقُوْلُ	نَادُوْا	شُرَكَآءِيَ	الَّذِيْنَ	زَعَمْتُمْ	فَدَعَوْهُمْ	فَلَمْ
वो फ़रमाएगा	पुकारो	मेरे शरीकों को	वो जिन्हें	गुमान करते थे तुम	तो वो पुकारेंगे उन्हें	पस ना

يَسْتَجِيْبُوْا	لَهُمْ	وَجَعَلْنَا	بَيْنَهُمْ	مَّوْبِقًا (52)	وَرَاَ	الْمُجْرِمُوْنَ
वो जवाब देंगे	उन्हें	और बना देंगे हम	दर्मियान उनके	हलाकत की जगह	और देखेंगे	मुजरिम

النَّارَ	فَظَنُّوْٓا	اَنَّهُمْ	مُّوَاقِعُوْهَا	وَلَمْ	يَجِدُوْا	عَنْهَا
आग को	तो वो समझ लेंगे	बेशक वो	गिरने वाले हैं उसमें	और ना	वो पाएंगे	उसमें

مَصْرِفًا (53) ع	وَلَقَدْ	صَرَّفْنَا	فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ	لِلنَّاسِ	مِنْ كُلِّ	ع 7 4 19
फिरने की जगह	और अलबत्ता तहक़ीक़	फेर-फेर कर बयान किया हमने	इस क़ुरआन में	लोगों के लिए	हर तरह की	

مَثَلٍ ۚ	وَكَانَ	الْاِنْسَانُ	اَكْثَرَ	شَيْءٍ	جَدَلًا (54)	وَمَا
मिसाल	और है	इंसान	ज़्यादा	हर चीज़ से	झगड़ा करने में	और नहीं

مَنَعَ	النَّاسَ	اَنْ	يُّؤْمِنُوْٓا	اِذْ	جَآءَهُمُ	الْهُدٰى	وَيَسْتَغْفِرُوْا	رَبَّهُمْ
रोका	लोगों को	कि	वो ईमान लाएं	जब	आ गई उनके पास	हिदायत	और वो बख़्शिश मांगें	अपने रब से

اِلَّآ	اَنْ	تَاْتِيَهُمْ	سُنَّةُ	الْاَوَّلِيْنَ	اَوْ	يَاْتِيَهُمُ	الْعَذَابُ
मगर	ये कि	आ जाए उनके पास	तरीक़ा/मामला	पहलों का	या	आ जाए उनके पास	अज़ाब

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قُبُلًا ﴿55﴾	وَمَا	نُرْسِلُ	الْمُرْسَلِيْنَ	اِلَّا	مُبَشِّرِيْنَ	وَمُنْذِرِيْنَ ۚ
सामने से	और नहीं	हम भेजते	रसूलों को	मगर	ख़ुशख़बरी देने वाले	और डराने वाले बनाकर

وَيُجَادِلُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِالْبَاطِلِ	لِيُدْحِضُوْا	بِهِ	الْحَقَّ
और झगड़ते हैं	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	साथ बातिल के	ताकि वो फुसला दें	साथ उसके	हक़ को

وَاتَّخَذُوْٓا	اٰيٰتِيْ	وَمَآ	اُنْذِرُوْا	هُزُوًا ﴿56﴾	وَمَنْ	اَظْلَمُ	مِمَّنْ
और उन्होंने बना लिया	मेरी आयात को	और जिससे	वो डराए गए	मज़ाक़	और कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जो

ذُكِّرَ	بِاٰيٰتِ	رَبِّهٖ	فَاَعْرَضَ	عَنْهَا	وَنَسِيَ	مَا	قَدَّمَتْ
नसीहत किया गया	आयात के ज़रिए	अपने रब की	फिर उसने ऐराज़ किया	उससे	और वो भूल गया	जो	आगे भेजा

يَدٰهُ ؕ	اِنَّا	جَعَلْنَا	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	اَكِنَّةً	اَنْ	يَّفْقَهُوْهُ
उसके दोनों हाथों ने	बेशक हम	डाल दिए हमने	उनके दिलों पर	पर्दे	कि	(ना) वो समझ सकें उसे

وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ	وَقْرًا ؕ	وَاِنْ	تَدْعُهُمْ	اِلَى الْهُدٰى	فَلَنْ	يَّهْتَدُوْٓا
और उनके कानों में	बोझ है	और अगर	आप बुलाऐं उन्हें	तरफ़ हिदायत के	तो हरगिज़ नहीं	वो हिदायत पाऐंगे

اِذًا	اَبَدًا ﴿57﴾	وَرَبُّكَ	الْغَفُوْرُ	ذُو الرَّحْمَةِ ؕ	لَوْ	يُؤَاخِذُهُمْ
तब	कभी भी	और रब आपका	बहुत बख़्शने वाला है	रहमत वाला है	अगर	वो पकड़े उन्हें

بِمَا	كَسَبُوْا	لَعَجَّلَ	لَهُمُ	الْعَذَابَ ؕ	بَلْ	لَّهُمْ	مَّوْعِدٌ
बवजह उसके जो	उन्होंने कमाई की	अलबत्ता वो जल्दी दे दे	उन्हें	अज़ाब	बल्कि	उनके लिए है	वादे का एक वक़्त

لَّنْ	يَّجِدُوْا	مِنْ دُوْنِهٖ	مَوْئِلًا ﴿58﴾	وَتِلْكَ	الْقُرٰى	اَهْلَكْنٰهُمْ
हरगिज़ ना	वो पाऐंगे	उसके सिवा	कोई पनाह गाह	और ये	बस्तियां हैं	हलाक किया हमने उन्हें

لَمَّا	ظَلَمُوْا	وَجَعَلْنَا	لِمَهْلِكِهِمْ	مَّوْعِدًا ﴿59﴾ ع	وَاِذْ	قَالَ	مُوْسٰى
जब	उन्होंने ज़ुल्म किया	और बना दिया हमने	उनकी हलाकत के लिए	वादे का एक वक़्त	और जब	कहा	मूसा ने

ع 8 6 20

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمْضِيَ	اَوْ	الْبَحْرَيْنِ	مَجْمَعَ	اَبْلُغَ	حَتّٰٓى	لَآ اَبْرَحُ	لِفَتٰىهُ
मैं चलता रहूंगा	या	दो समुन्दरों के	जमा होने की जगह	मैं पहुंच जाऊं	यहां तक कि	नहीं मैं हटूंगा	अपने नौजवान को

حُوْتَهُمَا	نَسِيَا	بَيْنِهِمَا	مَجْمَعَ	بَلَغَا	فَلَمَّا	حُقُبًا 60
अपनी मछली	तो दोनों भूल गए	दर्मियान उन दो (समुन्दरों) के	जमा होने की जगह	वो दोनों पहुंचे	तो जब	मुद्दतों

قَالَ	جَاوَزَا	فَلَمَّا	سَرَبًا 61	فِي الْبَحْرِ	سَبِيْلَهٗ	فَاتَّخَذَ
उसने कहा	वो दोनों आगे बढ़े	तो जब	सुरंग की तरह	समुन्दर में	रास्ता अपना	पस उसने बना लिया

مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا	لَقِيْنَا	لَقَدْ	غَدَآءَنَا ؗ	اٰتِنَا	لِفَتٰىهُ
अपने इस सफ़र में	पाई हमने	अलबत्ता तहक़ीक़	खाना हमारा	दो हमें	अपने नौजवान से

فَاِنِّيْ	اِلَى الصَّخْرَةِ	اَوَيْنَآ	اِذْ	اَرَءَيْتَ	قَالَ	نَصَبًا 62
तो बेशक मैं	तरफ़ चट्टान के	पनाह ली थी हमने	जब	क्या देखा तुमने	उसने कहा	थकावट

اَذْكُرَهٗ ۚ	اَنْ	الشَّيْطٰنُ	اِلَّا	اَنْسٰنِيْهُ	وَمَآ	الْحُوْتَ ؗ	نَسِيْتُ
मैं ज़िक्र करूं उसका	कि	शैतान ने	मगर	भुलाया मुझे उसको	और नहीं	मछली को	भूल गया था मैं

مَا	ذٰلِكَ	قَالَ	عَجَبًا 63	فِي الْبَحْرِ ۖ	سَبِيْلَهٗ	وَاتَّخَذَ
जो	यही है	कहा	अजीब तरह से	समुन्दर में	रास्ता अपना	और उसने बना लिया था

عَبْدًا	فَوَجَدَا	قَصَصًا 64 ۙ	عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا	فَارْتَدَّا	نَبْغِ ۖ	كُنَّا
एक बंदे को	तो दोनों ने पाया	इत्तिबा करते हुए	अपने निशानाते क़दम पर	तो वो दोनों पलटे	हम चाहते	थे हम

مِنْ لَّدُنَّا	وَعَلَّمْنٰهُ	مِّنْ عِنْدِنَا	رَحْمَةً	اٰتَيْنٰهُ	مِّنْ عِبَادِنَآ
अपने पास से	और सिखाया था हमने उसे	अपने पास से	रहमत	दी थी हमने उसे	हमारे बंदों में से

اَنْ	عَلٰٓى	اَتَّبِعُكَ	هَلْ	مُوْسٰى	لَهٗ	قَالَ	عِلْمًا 65
कि	उस पर	मैं पैरवी करुं तुम्हारी	क्या	मूसा ने	उसे	कहा	एक (ख़ास) इल्म

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

تَسْتَطِيْعَ	لَنْ	اِنَّكَ	قَالَ	رُشْدًا (66)	عُلِّمْتَ	مِمَّا	تُعَلِّمَنِ
तुम इस्तिताअत रखोगे	हरगिज़ ना	बेशक तुम	उसने कहा	हिदायत (समझ बूझ)	तुम सिखाए गए	उसमें से जो	तुम सिखाओ मुझे

تُحِطْ	لَمْ	مَا	عَلٰى	تَصْبِرُ	وَكَيْفَ	صَبْرًا (67)	مَعِيَ
तुमने अहाता किया	नहीं	जो	उस पर	तुम सब्र कर सकते हो	और किस तरह	सब्र की	मेरे साथ

وَّلَآ	صَابِرًا	اللّٰهُ	شَآءَ	اِنْ	سَتَجِدُنِيْٓ	قَالَ	خُبْرًا (68)	بِهٖ
और नहीं	सब्र करने वाला	अल्लाह ने	चाहा	अगर	यक़ीनन तुम पाओगे मुझे	उसने कहा	इल्म से	जिसका

تَسْـَٔلْنِيْ	فَلَا	اتَّبَعْتَنِيْ	فَاِنِ	قَالَ	اَمْرًا (69)	لَكَ	اَعْصِيْ
तुम सवाल करना मुझसे	पस ना	पैरवी करो तुम मेरी	फिर अगर	कहा	किसी हुक्म में	तुम्हारी	मैं नाफ़रमानी करुंगा

ع 9 11 21

حَتّٰٓى	فَانْطَلَقَا وقفة	ذِكْرًا (70) ع	مِنْهُ	لَكَ	اُحْدِثَ	حَتّٰٓى	عَنْ شَيْءٍ
यहां तक कि	तो दोनों चल दिए	ज़िक्र	उसका	तुम्हारे लिए	मैं बयान करुं	यहां तक कि	किसी चीज़ के बारे में

اَخَرَقْتَهَا	قَالَ	خَرَقَهَا ط	فِي السَّفِيْنَةِ	رَكِبَا	اِذَا
क्या सुराख़ कर दिया तुमने इसमें	कहा	तो उसने सुराख़ कर दिया उसमें	कश्ती में	वो दोनों सवार हुए	जब

قَالَ	اِمْرًا (71)	شَيْـًٔا	جِئْتَ	لَقَدْ	اَهْلَهَا ج	لِتُغْرِقَ
उसने कहा	बड़ी अजीब	एक चीज़	लाए हो तुम	अलबत्ता तहक़ीक़	इसके मालिकों (सवारों) को	ताकि तुम ग़र्क़ करो

قَالَ	صَبْرًا (72)	مَعِيَ	تَسْتَطِيْعَ	لَنْ	اِنَّكَ	اَقُلْ	اَلَمْ
कहा	सब्र की	मेरे साथ	तुम इस्तिताअत रखोगे	हरगिज़ ना	बेशक तुम	मैंने कहा था	क्या नहीं

مِنْ اَمْرِيْ	تُرْهِقْنِيْ	وَلَا	نَسِيْتُ	بِمَا	لَا تُؤَاخِذْنِيْ
मेरे मामले में	छा जा मुझ पर	और ना	भूल गया मैं	उस पर जो	ना तुम मुआख़ज़ा करो मेरा

غُلٰمًا	لَقِيَا	اِذَا	حَتّٰٓى	فَانْطَلَقَا وقفة	عُسْرًا (73)
एक लड़के को	वो दोनों मिले	जब	यहां तक कि	तो दोनों चल दिए	तंगी करके

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِغَيۡرِ	زَكِيَّةًۢ	نَفۡسًا	اَقَتَلۡتَ	قَالَ	فَقَتَلَهٗ ۙ
बग़ैर	जो पाक थी	एक जान को	क्या क़त्ल कर दिया तुमने	कहा	तो उसने क़त्ल कर दिया उसे

نُّكۡرًا ﴿74﴾	شَيۡـًٔا	جِئۡتَ	لَقَدۡ	نَفۡسٍ ؕ
इंतिहाई नापसंदीदा	एक चीज़	लाए हो तुम	अलबत्ता तहक़ीक़	किसी जान के (बदले)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION